

[४४] श्री नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः

नमो नमो निम्मलदंसणस्स
पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरुभ्यो नमः

“नन्दीसूत्र” चूर्णिः

[मूलं एवं चूर्णिः]

आद्य संपादकः - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म. सा.]
(किञ्चित् वैशिष्ट्यं समर्पितेन सह)

पुनः संकलनकर्ता → मुनि दीपरत्नसागर (M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि)

01/02/2017, बुधवार, २०७३ महा शुक्ल

jain_e_library's Net Publications

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [] / गाथा ॥-॥
प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥-॥ दीप अनुक्रम [-]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः प्रकाशिका—बुहारीवास्तव्यश्रेष्ठिभवनचंदपन्नाजीवितीर्णकिंचित्साहाय्येन श्रीकृष्णभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांबर संस्था, रतलाम । सूत्रयिता—जैनबन्धुमुद्रणालयाधिपः श्रीजुहारमल मिश्रीलाल पालरेचा इन्दौर वीर सं. २४५४ विक्रम सं. १९८४ काइष्ट सन १९२८ पण्यं १-१२-०
	नन्दी-सूत्रस्य मूल “टाइटल पेज”

मूलाङ्काः ५९+९०			नन्दी चूलिका-सूत्रस्य विषयानुक्रम				दीप-अनुक्रमाः १६३		
मूलांकः	विषयः	पृष्ठांकः	मूलांक	विषयः	पृष्ठांकः	मूलांकः	विषयः	पृष्ठांकः	
००१-१६३	नन्दी-सूत्रं	०६		→ श्रोता, पर्षदा	१५		→ मतिश्रुत ज्ञान वर्णनं	२८	
	→ वीरस्तुति	०६		→ ज्ञानस्य भेदाः	१५		→ अङ्गप्रविष्ठसूत्र वर्णनं	५२	
	→ संघस्तुति	०८		→ अवधिज्ञान वर्णनं	१७		-----		
	→ जिनवंदना, गणधरवंदना	११		→ मनःपर्यवज्ञान-वर्णनं	२०	-----	अनुज्ञानन्दी - परिशिष्टं १	-----	
	→ स्थविरावली	११		→ केवलज्ञान-वर्णनं	२२	-----	योगनन्दी- परिशिष्टं २	-----	
मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः									

[“नन्दीसूत्र-चूर्णिः” इस प्रकाशन की विकास-गाथा]

यह प्रत सबसे पहले “नन्दीसूत्र-स्य चूर्णिः” के नामसे सन १९२८ (विक्रम संवत् १९८४) में रुषभदेवजी केशरमलजी श्वेताम्बर संस्था द्वारा प्रकाशित हुई, इस के संपादक-महोदय थे पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी (सागरानंदसूरिजी) महाराज साहेब ।

✚ - हमारा ये प्रयास क्यों? -✚ आगम की सेवा करने के हमें तो बहुत अवसर मिले, ४५-आगम सटीक भी हमने ३० भागोमे १२५०० से ज्यादा पृष्ठोंमें प्रकाशित करवाए है, किन्तु लोगो की पूज्य श्री सागरानंदसूरीश्वरजी के प्रति श्रद्धा तथा प्रत स्वरूप प्राचीन प्रथा का आदर देखकर हमने उन सभी प्रतों को स्केन करवाई, उसके बाद एक स्पेशियल फोरमेट बनवाया, जिसके बीचमे पूज्यश्री संपादित प्रत ज्यों की त्यों रख दी, ऊपर शीर्षस्थानमे आगम का नाम, फिर मूलसूत्र-गाथा आदि के नंबर लिख दिए, ताकि पढ़नेवाले को प्रत्येक पेज पर कौनसा सूत्र/गाथा आदि चल रहे है उसका सरलतासे ज्ञान हो सके, बायीं तरफ आगम का क्रम और इसी प्रत का सूत्रक्रम दिया है, उसके साथ वहाँ ‘दीप अनुक्रम’ भी दिया है, जिससे हमारे प्राकृत, संस्कृत, हिंदी गुजराती, इंग्लिश आदि सभी आगम प्रकाशनोमें प्रवेश कर सके। हमारे अनुक्रम तो प्रत्येक प्रकाशनोमें एक सामान और क्रमशः आगे बढ़ते हुए ही है, इसीलिए सिर्फ क्रम नंबर दिए है, मगर प्रत में गाथा और सूत्रों के नंबर अलग-अलग होने से हमने जहां सूत्र है वहाँ कौंस [-] दिए है और जहां गाथा है वहाँ ||-|| ऐसी दो लाइन खींची है।

इस आगमचूर्णि के प्रकाशनोमें भी हमने उपरोक्त प्रकाशनवाली पद्धति ही स्वीकार करने का विचार किया था, परंतु चूर्णि और वृत्ति की संकलन पद्धति एक-समान नहीं है, चूर्णिमे मुख्यतया सूत्रों या गाथाओ के अपूर्ण अंश दे कर ही सूत्रो या गाथाओ को सूचित कर के पूरी चूर्णि तैयार हुई है, कई निर्युक्तियां और भाष्य दिखाई नहीं देते, कोई-कोई निर्युक्ति या भाष्य के शब्दों के उल्लेख है, उनकी चूर्णि भी है पर उस निर्युक्ति या भाष्य स्पष्टरूप से अलग दिखाई नहि देते। इसीलिए हमें यहाँ सम्पादन पद्धति बदलनी पड़ी है। हमने यहाँ उद्देशक आदि के सूत्रो या गाथाओ का क्रम, [१-१४, १५-२४] इस तरह साथमे दिया है, निर्युक्ति के क्रम भी इसी तरह साथमे दिये है और बायीं तरफ़ उपर आगम-क्रम और नीचे इस चूर्णि के सूत्रक्रम और दीप-अनुक्रम दिए है, जिससे आप हमारे आगम प्रकाशनोंमे प्रवेश कर सकते है।

अभी तो ये jain_e_library.org का ‘इंटरनेट पब्लिकेशन’ है, क्योंकि विश्वभरमें अनेक लोगो तक पहुँचने का यहीं सरल, सस्ता और आधुनिक रास्ता है, आगे जाकर इसी को मुद्रण करवाने की हमारी मनीषा है।

.....मुनि दीपरत्नसागर.

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [-] / गाथा - 													
	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः													
प्रत सूत्रांक [-] गाथा - दीप अनुक्रम [-]	मुद्रितपूर्वग्रन्थाः ।	मुद्रयिष्यमाणाः—	प्रतिपादितः, तथा च श्रीमतो हरिभद्रसूत्रेः पूर्वगतकतिचित्सूत्रार्थधारकता या श्रीसद्भिरभयदेवसूरिभिः पंचाशकवृत्तौ गदिता साऽवितथैव, एवं च तेषां पूर्वगतकालासन्नकालभावितया श्रीवीरहायनः पंचपंचाशदधिकवर्षसहस्रलक्षण एव सत्तासमयो योग्यः, एकादशशताब्द्यां भाविनो जिनभद्रा ध्यानशतकादिविधायिभ्योऽन्ये एवेति श्रीधर्मसामरैः स्वयमेव तत्रैव पट्टावल्यां ख्यातं तत्र दृष्टचरं कैश्चित्तदाश्चर्यं, नन्दीचूर्णिकालस्तु लेखकादिलिखित इति न विश्वासारहः, नतः ग्रन्थमध्ये ग्रन्थ कृत्तिलिखितः इति न बाधः इति ज्ञापयत्यानन्दसामरैः											
	<table style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 50%;">ऐन्द्रस्तुतयः</td> <td style="width: 50%; text-align: right;">०-८-०</td> </tr> <tr> <td>प्रकरणसमुच्चयः</td> <td style="text-align: right;">१-४-०</td> </tr> <tr> <td>अनुयोगद्वाराणां चूर्णिः वृत्तिश्च</td> <td style="text-align: right;">२-०-०</td> </tr> <tr> <td>ज्योतिष्करण्डकवृत्तिः</td> <td style="text-align: right;">३-८-०</td> </tr> <tr> <td>पंचाशकाद्यष्टशास्त्रीमूलं</td> <td style="text-align: right;">४-०-०</td> </tr> <tr> <td>प्रत्याख्यानादि</td> <td style="text-align: right;">१-४-०</td> </tr> </table> मुद्र्यमाणाः आवश्यकचूर्णिः वन्दारुवृत्तिः —=—	ऐन्द्रस्तुतयः	०-८-०	प्रकरणसमुच्चयः	१-४-०	अनुयोगद्वाराणां चूर्णिः वृत्तिश्च	२-०-०	ज्योतिष्करण्डकवृत्तिः	३-८-०	पंचाशकाद्यष्टशास्त्रीमूलं	४-०-०	प्रत्याख्यानादि	१-४-०	दशवैकालिकचूर्णिः उत्तराध्ययनचूर्णिः आचारांगचूर्णिः सूत्रकृतांगचूर्णिः प्राप्तिस्थानं— श्री ऋषभदेवजी केशरीमलजी, पेढी रतलाम. —=— श्रीहरिभद्रसूरिसमयप्रकाशः श्रीमता हरिभद्रसूरिणा पूर्वगतव्याख्याने पूर्वगतानां प्रायो व्यवच्छिन्नत्वमभिहितं, परिकर्मादीनां च समूल उच्छेदः
ऐन्द्रस्तुतयः	०-८-०													
प्रकरणसमुच्चयः	१-४-०													
अनुयोगद्वाराणां चूर्णिः वृत्तिश्च	२-०-०													
ज्योतिष्करण्डकवृत्तिः	३-८-०													
पंचाशकाद्यष्टशास्त्रीमूलं	४-०-०													
प्रत्याख्यानादि	१-४-०													

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [१] / गाथा ॥१॥
प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥१॥ दीप अनुक्रम [१]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ १ ॥ श्रीनन्दीसूत्रस्य चूर्णिः ॐ नमो वीतरागाय । सव्वसुतखंधतादीणं मंगलाधिकारे णंदित्ति वत्तव्वा णंदणे णंदी, नंदंति वा अणाणत्ति नंदी, नंदी पमोदो हरिसो कंदप्पो इत्यर्थः, तस्स य चतुळ्विधो शिक्खेवो, गयाओ णामठवणाओ, दव्वणंदी जाणगो अणुवउत्तो, अहवा जाणग- भावियसरीरवतिरित्तो बारसविहत्तुयसंघातो इमो-भंभा मुकुंद मइल कडव झहरि ह्हुक्क कंसाला । काहल तिलिया वंसो पणवो संखो य बारसमो ॥ १ ॥ भावणंदी, णंदिसहोवउत्तभावो, अहवा इमं-पंचविहणाणपरूवगं णंदित्ति अज्झयणं, तं च सुवसेण सव्वसुतभंतर- भूतं, तं च सव्वसुतारंभेसु विग्घोवसमणत्थमादीय मंगलद्धं पयुज्जति, तस्स य मंगलट्ठणावसरपत्तस्स गुरोर्वा विण्यस्स अत्थसुयगोरवुप्पा- यत्थं अविच्छेयसंताणागयसुयप्पदरिसणत्थं इमं थेरावल्लियं कहेत्ता ततो से अत्थं कथयंति, सव्वे सुतत्था य जतो तित्थकरप्पभवा अतो भत्तीए पण्णावगसावगपाढगचित्ता य पढमताए नमोक्कारं करेत्ता भणंति-‘जयति’ गाथा (*१ गाथा २ पत्रे) सोतिंदियादिविसयकसायप- रीसहोवसग्गा व वातिकम्ममट्ठप्पगारं वा परप्पवादिणो य जेतेंसु वा जयतिचित्ति भण्णति, जगति-खेत्तभावो तंमि जे जीवे तेसिं जाओ जोणीओ सच्चित्तअचित्तिसीतसंबुडादियाओ चतुरासीइलक्खविहाणा वा विविहपकारोहिं जाणमाणो वियाणओ, अहवा जेहिं कम्मोहिं जाए जोणीए उववज्जइ तं जहा जाणतित्ति विसिद्धो जाणगो वियाणगो, अहवा जगगहण्णातो धम्माधम्मागासपोगालगहणं, जीवत्ति सव्व- श्री वीरस्तुतिः ॥ १ ॥
	भगवत् तिर्थकर (सामान्य) स्तुतिः, वीर परमात्मानाम् स्तुतिः

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [] / गाथा २-७
प्रत सूत्रांक [-] गाथा २-७ दीप अनुक्रम [२-७]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ३ ॥ ताणं’ (*२-१५) गाहा, रागदोसादिअरी जिणंतो जितेंसु वा जिव्वइत्ति, सच्चसुताणंति सुतणाणत्थाणं भगवंततो पभवोत्ति पसूती, अणिट्ठवयणपरिहारातो पच्छिमोवि अपच्छिमो भवति, अहवा पच्छाणुपुव्वीए अपच्छिमो वीरो उस्सभो पच्छिमो, अत्रिसिट्ठसण्णिजीवलोगस्स वा, अहवा सम्मादिट्ठिमादिसंजुत्तो संजतलोगस्स गुरू, महं आया जस्स सो महप्पा, सो य अकम्मवीरियसामत्थतो महात्मा, केवलादिविसि- ट्ठल्लिसामत्थतो वा महात्मा, किंच ‘महं सच्च’ गाथा (*३-२३) भावतो भाविता भद्रं तं भगवतो भवउत्ति, लोगो-अट्ठविधोवि लोग- णिक्षेवो भणितव्वो, सेसं कंठ्यं । इमे संघस्स रथरूवंगं ‘महं सील’ गाथा (*६-४३) रहो सामन्नतो पंचमहव्वयमइतो ओसितेति तस्सट्टारससीलगसहस्सुसिता जत- पडाता बारसविधो तवो इंदियणोइंदियो य णियमो, एते अस्सा, सञ्ञायसहे णंदियोसो, सेसं कंठ्यं । संघस्सेव इमं-चक्ररूवंगं ‘संजम’ गाहा (*५-४३) विसुब्धभावचक्रस्स सत्तरसविधो संजमो तुंबं, तस्स बारसविधो तवो मत्ता अरगा, पारियल्लीति-जो बाहिरपुट्ठस्स बाहिर- ममी सा सो संमत्तं कत्तं, जम्हा अण्णेहि चरगाइएहि जेतुं ण सकत्ति तम्हा एयं जयति अप्पडिचक्रं च एयं, णमो एरिसस्स चक्रस्सेति । इमं संघस्सेव णगररूवंगं ‘गुणभवनगहण’ गाथा (*४-४२) तंमि पुरिससंघणयेरे इमे गुणा पिंडविसुद्धिसमित्तियुत्तिदव्वादिअभिग्गहमा- सादिपडिमा गोयेरे य एमादि उत्तरगुणा, तंमि संघणगेरे भवणा कया, भवणत्ति घरा, तेहिं गहणत्ति गिरंतरं संठिया घणा, तं च संघपुरिस- णगरं अंगाणगादिविचित्तसुयरयणभरियं खयोवसमियादिसम्मत्तमइयरत्थायायो मिच्छत्तादिकतवरबज्जियत्तणओ विसुद्धाओ, मूलगुण- चरित्तं च से पागारे, सो य अखंडोत्ति अविराधितो गिरइचार इत्यर्थः, सेसं कंठ्यं । इमंपि संघस्सेव पडमरूवंगं ‘कम्मरय’ गाथा (*७-४४) कम्म एव रयो कम्मरयो अथवा जं पुव्वं बध्यं तं कम्मं बज्झमाणं रयो तं सव्वंपि जलोहमिव कल्प्यतेऽथवा पुव्वबध्यं कम्मं बद्धं बज्झमाणं च श्री संघस्तुतिः ॥ ३ ॥
	भगवत् वर्धमानस्वामीनः स्तुतिः, भगवत् महावीरस्य अतिशय आश्रिता स्तुति, विविध रूपेण संघस्तुतिः,

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [I] / गाथा ८-१७
प्रत सूत्रांक [-] गाथा ८-१७ दीप अनुक्रम [८-१७]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः
	श्री नन्दीचूर्णी ॥ ४ ॥ श्री मधस्तुतिः ॥ ४ ॥ जलोहो ततो विनिगतो संघपथुमो, तस्स णालो सुत एव रयणं सुतरयणं तं से णालो कतो, पंचम्महब्बया जमा, थिरप्ति व्हा, ते कणियन्ति बाहिरा पत्ता क्या, गुणा-मूलुच्चरगुणा अस्स अणेगविधा तेहिं गुणेहिं अब्भहितस्सप्ति अधिकयोगयुक्तस्य गुणकेसरालस्स-मूलदिगुणकेसरायु-क्तस्य इत्यर्थः । ‘सावय’ गाथा (*८-४४) परिवुडत्ति परिकरियस्स, जिणसूरस्स धम्मकइणक्खाणतो जेण प्रबोधितं अणेगसमणंसइस्सा य से अर्द्धितरपत्ता कता, एरिसस्स संघपउमस्स भद्रं भवतु। इमं संघस्स चंदरूवंगं ‘तवसंजम’ गाथा (*९-४५) संघचंदस्स मियो णाम तवसंजमा तेहिं लळिओ, अकिरियत्ति-णत्थियवादी ते राहुमुई तेहिं अधरिसोत्ति ण सको वेत्तुं णिच्छन्ति-सव्वकालं संकादिविसुद्धं सम्मत्तं से जोण्हा, सेसं कंठयं । संघस्स सुररूवंगंतिमं ‘परत्तिथिय’ गाथा (*१०-४५) हरिहरहरिणसक्कोल्लगचरगतावसादयो ‘परत्तिथिय’ गाथा (*१०-४५) तेसिं णाणतेयपभं सुतादिणानप्पभा-पणासेत्ति, तवतेयकरणातो य अतिवदिसिंमंति लेसत्ति रस्सीतो सुताईणाणुज्जो-यसंपुण्णस्स य इमंभि जए संघसूरस्स भद्दं भवतु, सेसं कंठयं । इमं संघसमुदरूवंगं ‘भद्दं धिति’ गाथा (*११-४५) जलवट्टियंतरा जंर-मणं सा वेला सा य मेरावि भण्णत्ति, एवं संघसमुदस्स धितिवेला ताए परिवुडोत्ति वेढितो, वायणासज्झायजोगकरणं मगरो परप्रवादौपस-ग्गादिभिन्ने क्षुब्ध्यते, कंदो-महतो, सेसं कंठयं । इमं संघस्स मेरुरूवंगं, तस्स य पव्वयस्स इमे अवयवा-पेटं मेहला उस्सितो सिला मेहलासु कूडो मेहलाए वणं गुहा गुहासु य मिग्गिदा सुवण्णादिघायवो णाणादिविविधदित्तोसहिपज्जलितो णिज्झरा य सलिलजुत्ता कुहरा य से मयूरादिपाक्ख-उवसोहिता अगुवघातिविज्जुल्लतोवसोमितो य सो य कप्पादिरुक्खुवसोमितो य, अंतरेतरेसु य वेरुलियादिरयणसेमितो, एतेसिं पदानं पडिरूवेण इमाहिं छहिं गाहाहिं उवसंथागे ‘सम्महंसण’ गाथा (*१२-४५) ‘णियम्’ गाथा (*१३-४५) ‘जीवदया’ गाथा (*१४-४५) ‘संवर’ गाथा (*१५-४६) ‘विणय’ गाथा (*१६-४६) ‘णाणवर’ गाथा (*१७-४६) संघपव्वयस्स सम्महंसणं चेव वइरं, तं च

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [१] / गाथा ॥८-१७॥
प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥८-१७॥ दीप अनुक्रम [८-१७]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ५ ॥ संकादिसत्त्वरहित्यत्तणयो दहंति चिरवट्टियं, कइं ? , विमुक्कमाणत्तणयो अतीव अवगाहंति वुत्तं भवति, एतं पेढं, धम्मो दुविहो मूलत्तरगुणेषु, सो य दुविधोऽवि वरोत्ति-पधाणो, तत्थुत्तरगुणधम्मो रयणा तेहि मंडिता जे मूलगुणा ते चामीकरंति-तं सुवण्णं, तम्मयी मेहला तथा जुयस्स मेहला-गस्स, ‘णियमो’त्ति इंदिएसु अणगविधो सो य नियमो सिलायलो, तेहि चैव उस्सितो असुभज्जवसाणविरहितत्तणओ कम्मविमुक्कमाणत्तणतो वा उज्जलसुत्तथागुसरणदो य उज्जलं-दिस्सिमं चित्तज्जइ तेण दित्तं, तं चैव कूडंति-चित्तकूडं तस्स णंदेइ जेण वणयरजोइसभवणवेमाणिया व तेण णंदणं, वणंति-वणसंडं, तं वल्लिविताणणेगोसहिसतेहि य गहणं पत्तयपल्लवपुष्फफलोच्चतेहि मणहारित्तणतो मणहरं, गंधतो सुरभिगंधं, सीलवणसेडेवि जम्हा सदैव णंदेति प्रमोदंति रमंतीत्यर्थः विविहलद्धिवित्तमतो य मणहरं सीलवणं विमुद्धभावत्तणतो य सुगंधं, जहा दव्ववणसंडं गंधिण उदुमायंति व्याप्तं तहा सीलगंधेण संघस्स गंधुदुमायस्स किया, जं पत्तयासण्णं सिलारुक्खगहणं तं कंदरंति भावो, जीवेसु दयाकरणसुंदरं जं तस्स कंदरं, तत्थ य उप्पावल्ले य दरितोत्ति जीवदयाकरणदप्पितोत्ति वुत्तं भवति, को य सो?, मुणिगणो मइंदो परप्पवादि-सासणसंघमयाण इंदो, कथं ? , सियवादओत्ति सभावत्तणतो हेउत्ति-पक्खवंति कारणं वा ते सयग्गसो सुत्ते भवंति, ते य हेयवो धातू, ते य पगलंति परव्वणगुहाए, सा य परव्वणगुहा णाणादिरयणादिणहिं दित्ता खेलोसहिमादितोसधीहि वा दित्ता, स हि गुरुस्स संघस्स, संवरोत्ति पक्खक्खाणं तं चैव जलं-सलिलं, किंचि पव्वययातो ऊसरितं उज्जरं, इधावि खओवसमपभावातो खयोवसमियं उज्जरं, तातो पलंबिता खयो-वसमियसंवरदगधारा तेण विरायए सोभयतित्ति । सावगजणा पउरोत्ति-धट्टुः प्रचुरः सो य गीयज्जुणीए परवतित्ति रड्ढती ते चैव मोरा णाडगादीहि य णत्तंति, जे पव्वयस्स अहं समप्पदेसं रुक्खा तुगं च तं कुहरं, ए वं संघपव्वयस्स ण्हाणमंडवादी कुहरंति, विणयकरणतातो विणयणतो मुणी सो य विणयकरणतेण फुरयंतं चैव फुरितं विज्जुतंति-चकासियं तं च ओज्जलंति निम्मलं तेण उज्जलतेण संघसिहरं जालियामिव लक्खिज्जइ, संघस्तुतिः ॥ ५ ॥

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [१] / गाथा ॥१८-२५॥	
प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥१८-२५॥ दीप अनुक्रम [१८-२५]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ६ ॥ संधासिद्धरं व पावयणिपुरिसा ददुब्बा, तत्थ य विविधकुलुप्पणसाहवो कप्परुक्खखीरासवादिळिफलेहि य फलभरा ळद्धिहेसुट्टिया साधवो कुसुमिता गुणा वणत्ति ददुब्बा, मत्तिमुत्तादिणाणा वरेत्ति-पहाणा तच्चेव पाणावेरुलियादिरयणादिव कंता, कंता इति कंतिजुत्ता. कंतादि-जुत्तत्तणयो चेव सविसएण जीवादिपयत्थसरूवोवलंभतो दिप्पंति, पाणस्स मलो पाणावरणं तत्थिवगमतो य विगतमलं चूलामणिरिव सिहरोवरि चूला, सो य पाणातिसयऽत्थसरूवोवलंभगुणोहजुया जुगप्पहाणपुरिसा चूला इति, एवं संधपव्वयस्स पेढादिचूलपज्जवसाणकापियस्स वंदामि विणयप्पणतोत्ति छण्हवि गाहाणं, एत्थ य पदंति-एवं चरमत्तिथगरस्स संघस्स तप्पणामे कते इमा अवसरापण्णा आवली भण्णति, सा तिबिधा-त्तिथगर० गणधर० थविरावली, तत्थ तिथगर० दंसणत्थं इमं भण्णति— ‘वंदे उसभं’ ‘विमल’ गाथाद्वयं (१८-१९।४७) कंठ्यं, चरमत्तिथगरस्स इमा गणधरावली, ‘पढमेत्थ इंदभूती, बीए पुण होति अग्गि-भूतित्ति । ततिते य वाउभूती, ततो वितत्ते सुधम्मं य (२०-४८) मंडिय मोरियपुत्ते अकंपिते चेव अयलभाता य । मेतज्जे य पहासे गणहरा हांति वीरस्स (*२१-४८) एत्थं गणधरावलीतो सुधम्मातो थेरावली पव्वत्ता, जतो भण्णति ‘सुधम्मं अग्गिवेसाणं’ सिलोगो (*२३-४८) समणस्स णं० महावीरस्स कामवगोत्तस्स सुधम्मं अंतवासी अग्गिवेसायणसगोत्ते, सुधम्मस्स अंतवासी जंबुनामे कास-वगोत्तेण, जंबूणामस्स अंतवासी पभवे कच्चायणसगोत्ते, पभवस्स अंतवासी सज्जंभवे वच्छसगोत्ते, जसभइं गाथा (*२४-४९) सेज्जं-भवस्स अंतवासी जसभइं तुंगियायणवग्घावच्चसगोत्ते, जसभइस्स अंतवासी इमे दो थेरा-भइवाहु वार्हणतिसगोत्ते संभूइविजए य माढरस-गोत्ते, संभूतिविजयस्स अंतवासी थूलभइं गोतमसगोत्ते ‘एलावच्च’ गाथा (*२५-४९) थूलभइस्स अंतवासी इमे दो थेरा-महागिरी एलावच्चसगोत्ते सुहत्थी य वासिद्धगोत्ते, सुहत्थिस्स सुट्ठितमुप्पडिबद्धादयो आवलीते जहा दसासुते तहा भाणियव्वा, इह तेहिं अहिगारे णत्थि ॥ तीर्थकर गणधरा- णामावली ॥ ६ ॥	
	तिर्थकराणां एवं गणधराणां नामोच्चारणं, सुधर्मास्वामी आदि स्थविरावलि-वर्णनं	

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [I] / गाथा ३२-३८
प्रत सूत्रांक [-] गाथा ३२- ३८ दीप अनुक्रम [३४-४०]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ८ ॥ कुच्छित्तओ वळओ कुवलयो सो य कण्हकायो, कुवल्यं वा णीलुप्पळं, कुवल्यं वा रतणविसेसो, रेवतिवायगोत्ति, सेसं कंठ्यं, तस्स सीसो ‘अयलपुर’ गाथा (*३२-५१) बंभहीवगसाहीणं आयरियाण समीवे णिक्खंतो सीहवायको उत्तमवायकत्तणं च तं कालमुतसंभवं, सेसं कंठं । तस्म सीसो ‘जेसिं इमो’ गाथा (*३३-५१) कथं पुण तेसिं अणुयोगो ?, उच्यते, बारससंबच्छरीए महंते दुब्बिक्खकाले भत्तहा अण्णतो ठिताणं गहणगुणणपुप्पेहाऽभावतो सुते विप्पणट्ठे पुणो सुभिक्षकाले जाते मधुराए महंते साधुसमुदए खंदिलायरियप्पमुहसंधेण जो जं संभरइत्ति एवं संचडितं कालितमुतं, जम्हा य एयं मधुराय कयं तम्हा माहुरा वायणा भण्णति, सा य खंदिलायरियसंभयत्ति काउं तस्स- तियो अणुयोगो भण्णइ, सेसं कंठ्यं, अण्णे भण्णति-जहा सुतं ण णट्ठं, तंमि दुब्बिक्खकाले जे अण्णे पहाणा अणुयोगधरा ते विणट्ठा, एगे खंदिलायरिए संधरे, तेण मधुराए अणुयोगो पुण साधूणं पवत्तियोत्ति सा मधुरावायणा भण्णति, ततो ‘हिम’ गाथा (*३४-५१) हिमवंत- पव्वतेण महण्णं तुल्लं जस्स सो हिमवंतमहंतो, इयरथा णांत्थि अण्णो तत्तुल्लोत्ति, एस मुतिवातो, उत्तरतो वा हिमवंतेणं सेमदिसासु त समुदेण णिवारितो जसो हिमवंतनिवारणो जसो हिमवंतोत्ति, अतो हिमवंते महंतविक्रमो, कथं ?, उच्यते, सामत्थतो महंतेवि कुलगणसंघपयोयणे तरइत्ति, परप्पवादिजयेण वा विसेसल्लसिपण्णत्तणतो वा महंतो विक्रमो, अथवा परीसहोवसग्गे तवविसेसे वा धितिए ते परक्कमतो अणंत- गमपज्जवत्तणयो अणंतं वा सुतं महंतं, हिमवंतणामं वंदे, सेसं कंठ्यं, किंच-‘कालिय’ गाथा (*३५-५२) हिमवंतो चेव हिमवंतस्वमास- मणो, तस्स सीसो णागज्जुणायारितो, तस्स इमा गुणकित्तणा ‘मिउमइव’ गाथा (*३६-५२) अणुपुळ्वी-सामादियादिसुतगहणाण काल- तो य पूरिमपरियायत्तणेण पुरिसाणुपुळ्वितो य वायगत्तणं पत्तो, ओघमुतं वा उस्सग्गे तच्च आयरइ, सेसं कंठ्यं । एयस्स सीसो भूयदिब्बो आयरिओ तस्सिमा गुणकित्तणा तिणि गाथा ‘वरक्कणय’ गाथा (*३७-५२) गव्वत्ति पोमकेसरा, सेसं कंठ्यं, ‘अड्ढभरह’ गाथा (*३८- स्थविराणा- भावली ॥ ८ ॥

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [१] / गाथा ॥३९-४४॥
प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥३९- ४४॥ दीप अनुक्रम [४१-४६]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ९ ॥ ५२) बहुविधो सङ्ग्रायोति अंगपविट्टो बारसविधो अणंगपविट्टो य कालियओक्कालितो अणेगविधो सो यप्पहाणोति सुगुणितत्तणेण णिस्सं- कोत्तिकाडं, सेसं कंठ्यं, ‘भूतहिंसित’ गाथा (*३९-५२) भूयहितंति अहिंसा पगज्झन्ति धारेयव्वं अहिंसाभावे पगज्झता-अतीव अपमत्त- ताए अहिंसाभावपरिणया इत्यर्थः, सेसं कंठ्यं, भूयदिअस्स सीसो लोभिच्चो, तस्स इमा थुती-‘सुमुणिय’ गाथा (*४०-५३) सुट्ठु मुणि- वं, किं तं ?, भण्णति-ज्झित्तणेण णिच्चो, परमाणू अजीवत्तणेण सुत्तत्तेण यत्ति, णो दुप्पदेसादिएहिं, वण्णादिपज्जवेहि य अणिच्चो, सुट्ठु य मुणितं सुत्तत्थं धरेति, णिच्चकालं पि स्वभावे ठिओ सञ्भावो सोमणो वा भावो सञ्भावो संधेज्जमाणो वा भावो सञ्भावो तं ओच्चासए, वच्चत्तेण तथात्वेन इत्यर्थः, तं च लोभिज्जणामं आयरियं च, सेसं कंठ्यं, तस्स लोभिज्जस्स सीसो दूसगणी, तस्स इमा थुती-‘अत्थमह’- गाथा (*४१-५३) सा य अत्थस्स खाणी, किं विसिट्ठस्स ?, महत्थस्स महत्थो य अणेगपज्जायभेतभिणो, अथवा भासगरूवो अत्थो विभासगोवि, सञ्चपज्जवाविच्चीकरो य महत्थो, एरिसस्स अत्थस्स खाणी दूसगणित्ति संवज्झति. सुभो समणो सुस्समणो तस्स सुस्समणस्स, वक्खाणंति-अत्थकहणं तंमि अत्थकहणे, सोताराण कहेइ वाणी निव्वाणी, अहवा वक्खाणंति-अणुयोगपरूवणं कथणं-अक्खेवमादिताहिं कहाहिं धम्मकहणं, तत्थ बुहाण (कूडहला) वि आगताणं तस्स वाणी णिव्वाणी जणेति, किमंग पुण धम्मस्सवणट्ठमागताणं ?, अथवा पासेसु सवणत्ति कण्णा तेसु सुहं जणेइत्ति सुस्सवणा, एवं सुहकारती(णा) वातो भण्णंति, अथवा सुस्सवणा सुहस्रवा इत्यर्थः, सेसं कंठ्यं, इसावि दुस्सगणिणो वेव चलणथुती ‘सुकुमाल’ गाथा (*४२-५४) पवयणं-दुवाळसंगं गणिपिडगं अत्थि सो पावयणी, गुरवोत्ति काडं च बहुवयणं भणियं, सेसं कंठ्यं, एस णमोक्कारो आयरियजुगप्पहाणपुरिसाणं, विसेसग्गहणतो, इमो पुण सामणतो सुतविसिट्ठाण कज्जति ‘जे अणो’ गाथा (*४३-५४) कंठ्या, एयं च णाणपरूवणज्झयणं अरिहस्स देज्जइ, णो अणारिहस्स दिज्जइ, जतो भणितो ‘सेलघण’ गाथा स्थविरा- वली ॥ ९ ॥
	सामान्येन श्रुतधरमहर्षीणां नमस्कारम् ★ ज्ञानप्ररूपणा संबंधे शिष्याणां योग्यायोग्य विभाग-दर्शनार्थं १४ दृष्टान्ताः

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [१] / गाथा ४४-४७ 	
प्रत सूत्रांक [१] गाथा ४४- ४७ दीप अनुक्रम [४६-५३]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ १० ॥ (*४४-५४) एतथ अरिहो इमो कुडेसु अप्पसत्थवम्मसारित्था भावितेसु अवम्मसारित्था, तथा हंसमेसजल्लगजाहगसारित्था अरिहा, गोभेरी- आभीरीसु त पसत्थोवणतोवणीता अरहा, सेसा अणरिहा, इमस्स य णाणपरूवणज्झयणस्स परूवणे परिसा जाणगादि तिविधा जाणियन्वा, तत्थ जाणिता गुणदोसविसेसणू अणभिग्गहिता य कुस्सुइमतेसु । सा खलु जाणिग परिसा गुणतत्तिह्वा अगुणवज्जा ॥ १ ॥ इमा अजाणिया-पगतीसुद्धमजाणिय मियल्लावयसीहिकुक्कुरगभूता । रयणमिव असंठविता सुहसणप्पा गुणसभिद्धा ॥ २ ॥ इमा दुवियद्धा- ‘किंचिम्मत्तगाही पल्लवग्गाही य तुरियगाही य । दुवियद्धिया तु एसा भणिया तिविहा भवे परिसा ॥ ३ ॥ एतथ जाणिता अजाणिता य अरिहा ॥ एवं कयमंगलोवयारे थेरावलिकमे य दंसिए अरिहसु त दंसितेसु दूसगणिसीसो देववायगो साधुजणहियट्ठाए इणमाह— ‘णाणं पंचविधं’ इत्यादि (१सू. ६५) अस्य व्याख्या-णाति ण्णाणं अवधोधमित्तं, भावसाहणो, अथवा णज्जइ अणेण इइ णाणं स्वओवसम- खाइतभावेण, जीवादिपयत्था णज्जंति इति नाणं, करणसाहणो, अथवा णज्जति एतंमिच्छि णाणं, णाणमवि जीवोत्ति अहिकरणसाधणो, पंच इति संखा, विधिरिति भेदो, पण्णत्तं-पण्णवित्तं प्ररूपितमित्यन्तरां, अत्थतो तित्थकरेहिं, सुत्तओ गणधरेहिं, अथवा पण्णा बुद्धी पयाणपण्णेण अवात्तं पण्णत्तं, सत्तदिट्ठिणा लद्धमित्यर्थः, अथवा पहाणपण्णतो अवात्तं पण्णत्तं, तित्थगरसमीवतो गणधरेहिं लद्धंति वुत्तं भवति, अथवा पण्णा बुद्धी तीए आत्तं पण्णत्तं, तित्थगरगणधरायरियेहिं कथिज्जंतं बुद्धीए पण्णत्तमिति, तंदित्तणेण अधिकर्यं णाणं संबज्जइ, जे पुन्वसुवण्णत्था पंच- नाणभेया तेषां प्रतिपदमभ्युपगमे जहासहो, अत्थाभिमुहो नियतो बोधः २ स एव स्वार्थिकप्रत्ययोपादानादभिनिबोधिकं, अथवा अतो तद- भिनिबुज्झए तेण वाऽभिनिबुज्झए तंमि वाऽऽभिनिबोधिकं, स एव चाभिनिबोधिकोपयोगतोऽनन्यत्वादाभिनिबोधिकं, तथा तं सुणेति तेण वा सुणेति तम्हा व सुणेति तम्हि वा सुणेतीति सुत्तं, आत्मेव वा श्रुतोपयोगपरिणामानन्यत्वात् शृणोतीति श्रवणं, अवधीयत इत्यवधिः पर्वदः ॥ १० ॥	
	पर्वदायाः वर्णनं क्रियते ज्ञानस्य पंच भेदानां वर्णनं क्रियते	

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [२] / गाथा ४७...
प्रत सूत्रांक [२] गाथा ४७.. दीप अनुक्रम [५४]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ११ ॥ तेण वाऽवधीयते तस्मिन् वाऽवधीयते अवधानं वा अवधिः मर्यादेत्यर्थः। तीए परोपनिबन्धनातो दब्बादयो अवधीयंते इत्यवधीः, परि सव्वतो- भावेण गमणं पज्जवणं पज्जवो मणसि मणसो वा पज्जवो२, एस एव णाणं मणपज्जवणाणं, तथा पज्जयणं पज्जयो मणसि मणसो वा पज्जयः मनःपर्यायः स एव णाणं मणपज्जवणाणं, तथा आयो पावणं लाभो इत्यनर्थान्तरं, सव्वओ आयो पज्जाओ मणसि मणसो वा पज्जायो मणपज्जायो स एव णाणं मणपज्जवणाणं, मणसि मणसो वा पज्जवा तेसु वा णाणं मणोपज्जवणाणं, तथा मणसि मणसो वा पज्जवा पज्जाया वा तेसि तेसु वा णाणं मणपज्जवणाणं-गमणपरावत्तीगो लोको भेदादयो बहुपरावत्ता । मणपज्जवामि णाणे निरुत्तवण्णत्थमेवेति ॥ १ ॥ तथा केवलमेगं सुद्धं सकलमसाहारणमणंतं च इत्यर्थः, णाणसदो य सव्वत्थाभिणिवोभकादीण समाणाभिकरणो दट्ठव्वो, तंजहा-आभिनिबोधिकं च तं णाणं आभिणिबोधिकणाणं, एवं सव्वेसु वत्तव्वं, पुच्छा य-किमेम मतिणाणादियो क्रमो?, एत्थ उत्तरं भणति-एस सकारणो उवण्णासो, इमे य ते कारणा-तुल्लसामित्तणतो सव्वकालाविच्छेदठितित्तणतो इंदियाणिदियणिमित्तत्तणयो तुल्लखओवसमकारणत्तणतो सव्वदब्बादिविसयसामण- त्तणतो परोक्खसामणत्तणतो य, तन्भावे य सेसणाणसंभवतो, अतो आदीए मइमुत्ताइ कथाइ, तेसुवि य मतिपुव्वयं सुतंति पुव्वं मतिणाणं कयं, तस्य य पिट्ठतो सुतंति, अथवा इंदियाणिदियणिमित्तत्तेण आबिसिद्धेवि सति सुतेवि परोवदेसत्तणिमित्तभेदातो अरिहंतवयणकारणत्तणतो य सुतस्स मतिअणंतरं सुतंति, मतिसुतसमाणकालत्तणतो मिच्छदंसणपरिग्गहत्तणतो तन्निवज्जयसाधम्मत्तणतो सामिसाहंमत्तणतो सम्मत्ता- इकालेगलामत्तणतो यं मतिसुताणंतरं अवधित्तं भणितो, ततो छउमत्थसामिसामन्नत्तणतो य पोग्गलविसयसमभावत्तणतो य अवधिसमणंतरं मणपज्जवणाणंति, सव्वणाणुत्तमत्तणतो सव्वविसुद्धत्तणतो य विरयसामिसामणत्तणतो य तदंतं केवलं भणितं ॥ सव्वं एतं समासतो दुविधं-पच्चक्खं च परोक्खं चेत्यादि (सू. २-७१) इह अप्पवत्तव्वत्तणतो पुव्वं पच्चक्खं पण्णविज्जइ, इह ज्ञानभेदाः ॥ ११ ॥

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णः) मूलं [३-८] / गाथा ४७...
प्रत सूत्रांक [३-८] गाथा ४७.. दीप अनुक्रम [५५-६०]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ १२ ॥ जीवो अक्खो, कथं ?, उच्यते, ‘अशू व्याप्ता’ विति जाणप्पणताए अत्थे असइत्ति, इत्येवं जीवो अक्खो, जाणपभावेण बोधेइत्ति भणितं भवति, अथवा ‘अस भोजने’ इच्चेतस्स वा सव्वे असइत्ति अक्खो, पालेति भुंक्ते वेत्यर्थः, अक्खं पति वट्टइत्ति पच्चक्खं, अणिंदियन्ति वुत्तं भवति, चसइतो य सो अवधिमादिभेदो दट्ठव्वो, अक्खातो परेसु जं जाणं उप्पजइ तं परोक्खं, तं चेदं, चसइतो इंदियमणोणिमित्तं दट्ठव्वमिति ॥ ‘से किं तं पच्चक्खं ?’ (३-७५) पुच्छा, सेत्ति सः पच्चक्खणाणभेया ‘किन्तं’ ति पारिपण्हे, कतिभेदंति वुत्तं भवति, तं च किंसरूवं?, आयरिओ ‘तंजहेत्येवमादि, इंदियाणं सव्वातप्पएसेहिं स्वावरणक्खतोवसमातो जा लद्धी तं ताविंदियपच्चक्खं, तं पंचाविधं, (४-७६) पर आह-णणु दव्विंदियावत्थियपदेसमेत्तगाहणतो सेसप्पदेसेसु पुण उवलद्धीखयोवसमा णिरत्थभावा भवति, आयरिय आह-ण एवं, पदीवदिट्ठंतसामत्थतो, जथा चतुसालभवणेगदेसजालितो पदीवो सक्वं भवणमुज्जोवेति तथा दव्विंदियमित्तपदेसविसयपडि-बोधितो सव्वातप्पदेसोपयोगपरिच्छेययो खओवसमसाफल्लंया य भवइत्ति ण दोसो, भाविंदिओ य वावारपच्चक्खत्तणतो, एतं पच्चक्खं, परमत्थतो पुण चित्तमाणं एयं परोक्खं, कम्हा ?, जम्हा परा-दव्विंदिया, भाविंदियस्स य तदधिणत्तणतो, ‘णोइंदियपच्चक्खं’ ति (सू ५-७६) इंदियाइरिस्सं, तं तिबिहं, एवमादी अवहिन्ति मज्जाया, सा य रूविदव्वे, सुब्भिरूवेत्ति वयणातो, तेसु जाणं ओधिणाणं भवपच्चइयंति (६-७६) (७-७६) भणिते, णणु ओधी खयोवसमिते भावे णरगादिभवो सो उदइए भावे कथं भवपच्चइतो भण्णति ?, उच्यते, सोवि खयोवसमितो चेव, किन्तु सो चेव खयोवसमितो णरगदेवमवेसु अवस्सं भवइत्ति, दिट्ठंतो पक्खीणं आगासगमणं व, एवं भवपच्चइतो भण्णति, (सु.८-७६) खतोवसमितो पुण णरतिरियाणं, तेसु णावस्सं उप्पजइत्ति, खयोवसमभावे केइ, खयोवसमसरूवं च सुते जेव भणियं, ‘को हेतु’ ति इदि सो य खयोवसमो गुणमंतरेण जहा गगणम(ब्भ)च्छादिते अधापावित्तो छिहेणं दिणकरकिरणव्व विणिस्सित- प्रत्यक्ष- परोक्षे ॥ १२ ॥
	अवधिज्ञानस्य वर्णनं क्रियते

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [८-१६] / गाथा ४८-५५
प्रत सूत्रांक [८-१६] गाथा ४८-५५ दीप अनुक्रम [६०-८०]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ १३ ॥ दन्वमुज्जोर्वन्ति तथा अवधिआवरणस्वयवसमे त अवधिलभो अधापवित्तितो विष्णातो, ‘गुणपडिवन्न’ इत्यादि, उत्तरुत्तरचरणगुणविसुज्ज- माणवेक्खातो अवधिणाणदंसणावरणाण स्वयवसमो भवति, तस्वयवसमेण अवधि उपज्जइ, ‘अणुगामियन्ति’ अणुगमणसीलो अणुगामितो तदावरणस्वयवसमात्तप्पदेसविसुद्धगमणत्तातो लोयणं वा, अंतगतंति जल्ल अल्लंतं पव्वतंतं पव्वता, अविसिद्धो अंतसहो, एवं ओरालियस- रीरंते ठितं गतंति एगद्धं, तं च आतप्पदेसफड्डुगावहि एगदिसोवलंभातो य अंतगतमोहिणाणं भण्णति, अथवा सव्वातप्पदेसविसुद्धेसु ओरा- लियसरीरगतेण एगदिसिपासणं गतंति अंतगतं भण्णति, अहवा फुडं परमत्थो भण्णति-एगदिसावधिउवल्लद्वेत्तातो सो अवधिपुरिसो अंत- गतोत्ति जम्हा तम्हा अंतगतं भण्णति, मज्झगतं पुण ओरालियसरीरमज्झफड्डुगविसुद्धीतो सव्वदेसविसुद्धीतो वा सव्वदिसोवलंभत्तणतो मज्झ- गतोत्ति भण्णति, अथवा उवल्लद्विस्सेत्तस्स वा अवधिपुरिसो मज्झगतोत्ति, ‘उक्क’ ति दीवितो ‘चुडलि’त्ति तणापिंडी अग्गे पज्जलिता आलातं विदारयं जल्लंतं मणिं वा जल्लितं ‘जोइ’ ति मल्लगादिद्वियं अगणिं जल्लंतं ‘पदीवो’त्ति दीवतोत्ति पुरतोत्ति-अगगतो ‘पणोल्लणं’- ति पुद प्रेरणे हत्थगहियस्स डंडगठितस्स वा परंपरेण सुदन्नित्यर्थः, ‘मग्गतो’त्ति पिट्ठो ‘अणुकड्डुणं’ति हत्थगहितस्स डंडगगाहियस्स वा अणु पच्छा वा कड्डुणंति, पासतोत्ति दाहिणे वा वामे वा पासे दोसु वा सयं जमल्लट्ठितं ‘परिकड्डुयं’ ति हत्थं डंडगठितं वा परिपासओ ठितस्स कड्डुणं, सीसो पुच्छति ‘अंतगतस्स य’ इच्चादि, आयरिय आह-पुरतो, इच्चादि, सव्वतोत्ति-सव्वासुवि दिसिविदिसासु समंता इति सव्वातप्पदेसे- सु वा विसुद्धफड्डुगेसु, वा, अहवा सव्वतोत्ति सव्वासु दिसिविदिसासु सव्वातप्पदेसफड्डुगेसु त, स इति णिहेसो अवधिपुरिसस्स, मंता इति णाता, अहवा समं दव्वादयो तुल्ला अत्ता इति प्राप्ता इत्यर्थः, गच्छंतमणुगच्छइत्ति, अणाणुगामितं संकलापडिवद्धाद्वियपदीवो- व्व तस्स य खेत्तावेक्खस्वयवसमलाभेण अणाणुगामितं, परंतंति समंतयो अगणीपासेणं तस्स य जोइस्सा सव्वदिसिविदिसासु अवधिज्ञानं ॥ १३ ॥

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [८-१६] / गाथा [४८-५५]
प्रत सूत्रांक [८-१६] गाथा [४८- ५५] दीप अनुक्रम [६०-८०]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ १४ ॥ समंता परिघोलणंति-पुणो२ इतो२ परिसक्कणं । वद्धंतं वुद्धीं तं पुव्वावत्थातो उवरुवरि वद्धमाणंति, तं च उस्सणं चरणगुणविसुद्धमवेक्खत्तणतो पसत्थज्झवसाणट्ठाणातो जदि पसत्थलिस्सामणुगता भवंति, पसत्थदव्वलेसाहिं अपुरंजियं चित्तं पसत्थज्झवसाणं भण्णइ, पसत्थज्झवसाणातो य चरणातो य चरणातविसुद्धीतो य चरणपच्चतलद्धीणं वद्धी भवति, इमाओ य जहणमुक्कोसविमज्जसोहिबद्धिदंसणगाहाओ जहा पेढियाए, हाणित्ति हस्समाणं पुव्वावत्थातो अधोऽधो हस्समाणं, तं च वद्धमाणविपक्खतो भणितव्वं, अप्पसत्थलेस्सोवरंजितं चित्तं अणेगा- सुमत्थचित्तणपरं चित्तं संकिलिट्ठं भण्णति, उप्पणोहिणाणस्स पुणो पातोत्ति परिवाती भाव इत्यर्थः, तं च खेत्तविसेसोवलंभेण भण्णति, ते य इमे-असंखयंगुलभागादोया, दुप्पभित्ति जाव णवत्ति अंगुलपुहुत्तं भण्णति, दो इत्था कुच्छी, पडिवाविणो जाव उक्कोसो लोमसेत्तए वा, अप- डिवादित्ति सोवि खेत्तविसेसोवलंभातो चेव णज्जइ, अतो भण्णति-अलोगरस्स एगमवित्ति, अविपदत्थो संभावणे, किमुत दुपदेसादिउवलंभे इत्यर्थः, वित्थरेण खयोवममविसेसतो असंखेज्जविहमोहिणाणं, ओहिमादिगतिपज्जवसाणं वा चउहसविधिवित्थरो, ते पडुच्च इमं चउठ्विहं समासतो भण्णति, ‘दव्वादि’ दव्वाओ ओधिणाणी जहण्णेण तेयाभासंतरे अणंते दव्वे उवलभइ, उक्कोसतो सव्वरूपविदव्वाइ, जाणइ- त्ति णाणं, तं च जं विसेसगाहं तं णाणं, सागारमित्थर्थः, दंसेइत्ति दंसणं, तं च जं सामण्णगाहं तं दंसणं, अणागारमित्थर्थः, खेत्ते कालतो य सुत्तसिद्धं, भावतो ओधिणाणी जहण्णेण अणंते भावे उवलभइ, उक्कोसतोवि अणंते, जहणपदातो उक्कोसपदं अणंतगुणं, उक्कोसप- देवि जे भावा ते सव्वभावणं अणंतभागे वट्ठंति, ओधी भव(५६-९८) गाहा-दव्वतो बहुविकप्पा परमाणुमादियविसेसतो, खेत्ततोवि अंगुल- असंखेयभागविकप्पादिया, कालतोवि आबलियअसंखेज्जभागादिता, भावतोवि वण्णपज्जवादिता । मणपज्जवणाणमिदाणि, तस्स सरूवं वण्णितमादीप, इदाणि सामी विसेसिज्जइ पुव्वसुत्तेहि— अवधिज्ञानं ॥ १४ ॥

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [१७-१८] / गाथा [५६-५८]	
प्रत सूत्रांक [१७-१८] गाथा ॥५६- ५८॥ दीप अनुक्रम [८१-८४]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ १५ ॥ ‘किं मणुस्स’ (१७-१९) इत्यादि, संमुच्छिन्नमणुस्सां, गच्छभवकंतिग्रमणुस्साण चैव वन्तापित्तादिसु संभवन्ति, कम्मभूमगा पंचसु भरहेसु पंचसु एरवणसु पंचसु महाविदेहेसु य, हेभवदादिसु मिट्ठणा ते अकम्मभूमगा, तिण्णि ज्ञायणसता लवणजलमोगाहिता चुल्लहिमवन्तसिहरिपाद-पदिट्ठिता एगोरूगादिकल्लप्पणअंतरदीविगा, किं पज्जत्ताणं अपज्जत्ताणंति-पज्जत्तीणाम सत्ती, सामत्थतो य पुग्गलदब्बोवचया उप्पज्जइ, ताओ य छप्पज्जत्तीओ, ता आहार० सरीर० इंदिय० आणपाण० भासा० मणपज्जत्ती चेति, तत्थ एगेन्दियाणं चडरो, विगलिवियाणं पंच, असंणीणं संभवहा-रतो पंच चैव, सण्णीणं च छ, तत्थ आहारपज्जत्ती णाम खलरसपरिणामसत्ति, आहारपज्जत्तीए सत्तधातुतया परिणामसत्ती सरीरपज्जत्ती, पंचण्हमिंदियाणं जोग्गा पोग्गला विचिणिंसु अणाभोगानिक्कत्तितवीरियकरणेण तच्चभावापायणसत्ती इंदियपज्जत्ती, (उस्सास) पोग्गलजोगाणापाणूण, भासा जोग्गा गहणणिसिरणसत्ती भासापज्जत्ती, मणजोग्गे पोग्गले वेत्तूण मणत्ताए परिणामणिसिरणसत्ती मणपज्जत्ति, एताओ पज्जत्तीओ पज्जत्ती-णामकमोदणं निव्वत्तिज्जन्ति, ता जेसिं अत्थि ते पज्जत्तया, अपज्जत्तयणामकम्मोदणं अणिट्ठिता ता जेसिं ते अपज्जत्तया, अप्पमत्तसंजमा जिणकप्पिता परिहारविसुद्धिया अधाल्लिंदिया पडिमापडिवण्णगा य, एते सततोवयोगोवउत्तत्तणतो अप्पमत्ता, गच्छबासिणो पुण पमत्ता, कण्डुइ अणुवयोगसंभवतातो, अथवा गच्छवासी णिग्गता य पमत्तावि अपमत्तावि भवन्ति, परिणामवसत्तो, इट्ठिपत्तस्सेति आभोसधिमदिअण्णयरइट्ठिपत्तस्स मणपज्जवण्णं उप्पज्जइ, अथवा ओधिणाणिणो मणपज्जवण्णं उप्पज्जति, अण्णे णियमं भणन्ति, ऊजुमती-उज्जुमती, सामण्णग्गाहिणिसि भणितं होति, एस मणोपज्जयविसेसोत्ति, उस्सण्णं विसेसेइ-विसुद्धं उवलमति, णातीव बहुविसेसविसिद्धं अत्थं उवलम्भइत्ति भणितं होति, घटोऽ-णेण चित्तिउत्ति जाणइ, विपुला मती विपुलमती, बहुविसेसग्गाहिणित्ति भणितं भवति, मणोपज्जायविसेसं जाणति, दिट्ठतो जधाऽणेण घटो चित्तितो, तं च देसकालादिअण्णपज्जायविसेसविसिद्धं जाणति, अहवा रिजुविडलमतीणं इमं दब्बादीहि विसेससरूवं भण्णति-सण्णिणा मणत्तेण मनःपर्यव ज्ञानं ॥ १५ ॥	
	अथ मनःपर्यवज्ञानस्य वर्णनं क्रियते	

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [१७-१८] / गाथा [५६-५८].....
प्रत सूत्रांक [१७-१८] गाथा ॥५६- ५८॥ दीप अनुक्रम [८१-८४]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ १६ ॥ मणिते मणोस्त्रे अणंते अणंतपदेसिए दव्वट्ठताए तग्गए य बण्णादिए भावे मणपज्जबणाणेणं पक्खस्सं पेक्खमाणो जाणइत्ति मणितं, मणियत्थं पुण पक्खस्सं णो पेक्खइ, जेण मणणं सुत्तममुत्तं वा, सो य छउमत्थो तं अपुमाणतो पेक्खइत्ति, अतो पासणता भणिया, अहवा छउमत्थस्स एगाविधस्सयो वसमलंभे विविधोवयोगसंभवा भवति, जाहत्थे व रिजुविपुलमतांणं व ओवयोगो, अयो विसेससामण्णत्थेसु उवउज्जतो भण्णति पासइत्ति मणितं ण दोसो, विपुलमती पुण दव्वट्ठयाते वण्णादिएहि य अधिगतं जाणतीत्यर्थः, उवरिमहेट्ठिछाईं खुड्ढागपतराईंति इमस्स भावणत्थं इमं पण्णविज्जइ-तिरियलोगस्स उड्ढाहो अट्ठारसजोयणसतियस्स बहुमज्जे एत्थ असंखेज्जअंगुलभागमेत्ता लोगागासप्पयरा अलोगेण संवट्ठिया सव्वखुड्ढगयरा खुड्ढागपतरात्ति भणिता, ते य सव्वतो रज्जुपमाणा, तेसिं जे य बहुमज्जे दो खुड्ढागपयरा, तेसिंपि बहुमज्जे जंबुरीवे रयणप्पपुढाविबहुसमभूमिभागे मंदरस्स बहुमज्जदेसे एत्थ अट्ठप्पदेसो रुयगो, जतो विसिंविदिसिंविभागो पवत्तो, एतं तिरियलोगमज्झं, तातो तिरियलोगमज्झातो रज्जुप्पमाणाखुड्ढागपतरेहिंतोवरि तिरियं असंखेयंगुलभागवुड्ढी उवरिहुत्तोऽवि अंगुलसंखेयभागारोहो चेव, एवं तिरियमुवरिं च अंगुलसंखेयभागवुड्ढीए ताव लोमवुड्ढी णेतव्वा जाव उड्ढलोममज्झं, तओ पुणो तेणेव कमेणं संवट्ठो कायव्वो जाव उवरि लोमंतो रज्जुप्पमाणा, ततो य उड्ढलोममज्झायो उवरिं हेट्ठा व कमेण खुड्ढागपतरा भाणितव्वा जाव रज्जुप्पमाणा खुड्ढागपतरत्ति, तिरियलोगमज्झरज्जुप्पमाणाखुड्ढागपतरेहिंतोवि हेट्ठा अंगुलसंखेयभागवुड्ढी तिरियं अधोऽवगाहेणवि अंगुलस्स असंखभागो चेव, एवं अधोलोमो वड्ढेयव्वो जाव अधोलोमंतो सत्तरज्जुओ, सत्तरज्जुपयरेहिंतो उवरिवरिक्कमेण खुड्ढागपतरा भाणियव्वा जाव तिरियलोगमज्झरज्जुप्पमाणा खुड्ढागपतरत्ति। एवं खुड्ढागपरूवणे कते इमं भण्णति-उवरिमत्ति य लोमज्झतो अधो जाव णव जोयणसते जाव इमीए रयणप्पमाए पुढवीए उवरिमखुड्ढागपतरत्ति भण्णति, तदधो अधोलोमो जाव अधोलोमइयगामवत्तिणो ते हेट्ठिमखुड्ढागपतरत्ति भण्णति, रिजुमती अधो ताव पासतीत्यर्थः, अथवा खुल्लक- प्रतरादि ॥ १६ ॥

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [१७-१८] / गाथा ५६-५८
प्रत सूत्रांक [१७-१८] गाथा ५६-५८ दीप अनुक्रम [८१-८४]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णी ॥ १७ ॥ अधोलोगस्स उवरिमखुङ्गागपतरा तिरियलोगस्स हिट्ठिमा खुङ्गागपतरा ते जाव पश्यतीत्यर्थः, अण्णे भणंति-उवरिमात्ति अधोलोगोवरि ठिता जे त उवरिमा, के य ते ?, उच्चते, सव्वतिरियलोगवत्तिणो तिरियलोगस्स वा अहो णवसयवत्तिणो ताण चेव जे हिट्ठिमा ते जाव पश्यतीत्यर्थः, इमं णो घडइ, अहोलोइयगाममणपज्जवणाणसंभववाहलत्तणतो, उक्तं च-इहाधोलाकिकान् मामान्, तिर्यग्लोकाविवर्त्तिनः । मनोगतांस्त्वसौ भावान्, वेत्ति तद्वर्त्तिनामपि ॥१॥ अङ्गुतिज्जंगुलगगहणं उस्सेधअंगुलमाणेण ढ, कहं णज्जइ ?, उच्चयते, ‘उस्सेधपमाणतो मिणसु देह’ ति वयणातो अंगु-लादिया य जेविप्पमाणा ते सव्वे देहनिष्फण्णा इति, णाणविसयत्तणतो य, दो सा० रिजुमतिखेत्तोवलंभप्पमाणातो विपुलमती अम्भहिय-तरागं उवलभइत्ति, एगदिसिपि अम्भहियसंभवो भवइत्ति समंततो जम्हा अम्भहियंति तम्हा विपुलतरागं भण्णति, अथवा जधा जवेड्डो घडातो जलाधारत्तणतो अम्भहिअतो सो पुण निथमा घडागासखेत्तेण विपुलयरो भवति, एवं विपुलमती अम्भहिततरागमणोलद्धिजीव-दव्वाधारं खेत्तं जाणति, तं च णियमा विपुलयरं इत्यर्थः, अहवा आत्थामयिक्खंमेणं अम्भहियतरागं बाहलेण विपुलयरं खेत्तं उवलभत इत्यर्थः, अहवा दोवि पदा एगट्ठा, विशिष्टविविहविसेसदेसगो तरसहेत्ति यथा मुक्क मुक्कतर इति, किं च जहा पगासगदव्वविसेसतो खेत्तविसुद्धि-विसेसो लक्खिज्जइ तथा मणपज्जवणाणावरणविसेसातो रिजुमणपज्जविणाणसमीवातो विपुलक्खमणपज्जवणाणी विसुद्धतरागं जाणति, मणपज्जव-णाणावरणखयोवसममत्तलंभत्तणतो वा वितिमिरतरागंति भण्णति, अहवा पुव्ववद्धमणपज्जवणाणावरणखयोवसमलंभमुत्तमलंभत्तणतो विसुद्धंति भण्णितं, तस्सेवावरणस्स पज्जरमाणस्सभावत्तणतो पुव्ववद्धस्स तु अणुदयत्तणतो वितिमिरतरागंति भण्णति, अहवा दोऽवि एते एगट्ठिता पदा ७ मणपज्जवणाणस्स, सेसं कंठ्यं ॥ इदानीं केवलणाणं भण्णति-मणपज्जवणाणाणंतरं सुत्तकमुदिट्ठत्तणतो विसुद्धिमुत्तरमयो य केवलं भण्णति— ‘से किं तं केवले’ त्यादि सूत्रं, (१९-११७) केवलणाणअमेदेवि भेदो भवसिद्धावत्थादिणहि अणेगधा इमो कज्जइ, मणुस्सभवठि- मनः पर्यव ॥ १७ ॥
	अत्र केवलज्ञानस्य वर्णनं आरभ्यते

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [१९-२३] / गाथा ५९-६०
प्रत सूत्रांक [१९-२३] गाथा ५९-६० दीप अनुक्रम [८५-९२]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दोचूर्णौ ॥ १८ ॥ तस्स जं केवलणाणं तं भवत्थकेवलणाणं, चसहो उस्सण्णे, भेद ओसण्णे, सञ्चकम्मविमुक्को सिद्धो तस्स जं णाणं तं सिद्धकेवल०, (जोगो-मणा-दिवावारजुओ अजोगी रुद्धजोगो स० ॥वठितो तस्स जं णाणं तं अयोगिभवत्थकेवलणाणं, पढमसमयो केवलणाणुप्पत्तिसमयो चेव, अपढमो वितियादिसमयो जाव सजोगि तस्स चरमसमयेत्यर्थः, अहवा एसेवत्थो समयविकप्पेण अण्णहा दंसेज्जइ, सजोगिकालचरमसमए चरिमोत्ति पच्छिमो, ततो परं अयोगी भविष्यतीत्यर्थः, चरिमो ण भवति, चरिमस्स आदिसमयतो आरम्भ ओमत्थगं गेज्जं । तत्थ सिद्धकेवलणाणं दुविधं-अणंतरं जाव पढमसमयो जाव अचरमो भण्णति, एतेसु जं णाणं तं अचरमसमयभवत्थकेवलणाणं, सेसं कंठ्यं । ‘से किं तं सिद्धकेवलणाणे’ त्यादि सूत्रं (२०-११३) तत्थ सिद्धकेवलणाणं दुविधं-अणंतरं परंपरं, तत्थ अणंतरं णो समयंतरं पत्तो, सिद्धत्तप्रथमसमय इत्यर्थः, ते पंचदसविधा तित्थसिद्धाइया. तित्थसिद्धा इति जे तित्थे सिद्धा ते तित्थमिद्धा, तित्थं चाउव्वण्णो समणसंघो पढमादिगणधरो वा, भणितं च आरिसे-तित्थं भंते ! तित्थं अरहादि तित्थं?, गोयंमा ! अरहा ताव तित्थंकरे, तित्थं पुण चाउव्वण्णो समणसंघो” तंमि तित्थकालभावे उप्पण्णे ततो वा तित्थकालभावातो जे सिद्धा ते तित्थसिद्धा, अतित्थं चाउव्वण्णसंघस्स अभावो तित्थकालभावस्स वा अभावो तंमि अतित्थकालभावे अतित्थकालभावतो वा जे सिद्धा ते अतित्थसिद्धा, तं च अतित्थंकरे तित्थे वा अणुप्पण्णे जहा मरुदेविसामिणीप्पमित्तयो, रिसभाइयो तित्थकरा ते जम्हा तित्थगरणामकम्मुदयभावे ठिता तित्थगरभावातो सिद्धा तम्हा ते तित्थगरासिद्धा, अतित्थकरा-सामण्णकेवलिणो ते गोयमादि तंमि अतित्थकरभावे ठिता अतित्थकरभावतो वा सिद्धा अतित्थकरसिद्धा, स्वयमेव बुद्धा स्वयंबुद्धा, समयप्पणा, जे वा जाइसरणादिकारणं पडुच्च बुद्धा, स्फुटतरमुच्चते बाह्यप्रययमंतरण ये प्रतिबुद्धास्ते स्वयंबुद्धा, ते य दुविधा-तित्थगर तित्थगरवतिरित्ता य, इह वइरित्तेहि अधिकारो, किं च स्वयंबुद्धस्स बारसविहोदि उवधी भवति पुव्वाधीतं से सुतं भवति व जणा, जति से णत्थि तो लिंमं णितमा गुरुसण्णिधे य पडिबज्जइ, एत्थेव सिद्धभेदाः ॥ १८ ॥
	अत्र सिद्धानां भेदाः वर्णयन्ते

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [१९-२३] / गाथा ५९-६०
प्रत सूत्रांक [१९-२३] गाथा ५९-६० दीप अनुक्रम [८५-९२]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ १९ ॥ विहरइ, अथ पुन्वाधीतसुतसंभवो अत्थि तो से लिंगं देवया पयच्छइ, गुरुसणिधे वा पडिवउजइ, जइ य एगविधारपविचरणजोगो इच्छा वा सा ता एको चेव विहरइ, अण्णहा गच्छे विहरतीत्यर्थः, एयंमि भावे ठिता सिद्धा एतातो वा भावातो सिद्धा। पत्तेयबुद्धा पत्तेयं बाह्यं वृषभादि- कारणमभिसमीक्ष्य बुद्धा प्रत्येकबुद्धा, बहिःप्रत्ययं प्रतिबुद्धानां च पत्तेयं गियमा विहारो जम्हा तम्हा यते पत्तेयबुद्धा, जधा करकंडुमादतो, किं च पत्तेयबुद्धानां जहण्णेण दुविधो उक्कोसेणं णवविधो उवधी गियमा पाउरणवज्जो भवति, किं च-पत्तेयबुद्धानं पुन्वाधीतं सुत्तं गियमा भवति, जहण्णेणं एकारसंगा उक्कोसेणं भिण्णदसपुन्वा, लिंगं च से देवया पयच्छति, लिंगवज्जितो वा भवति, जतो य भणितं-‘रुपं पत्तेयबुद्धा’ इति, एयंमि भावे एतातो वा सिद्धा पत्तेयबुद्धसिद्धाः। बुद्धबोधिता जे सतंबुद्धेहिं तिथंगरादिएहिं बोधिता पत्तेयबुद्धेहिं वा कविलादिएहिं बुद्ध- बोधिता, अहवा बुद्धबोहिएहिं बोधिता बुद्धबोधिता, एवं सुधम्मादिएहिं जंबुणामादयो भवन्ति, अहवा बुद्ध इति प्रतिबुद्धा तेहिं प्रतिबोधिता बुद्धबोधिता प्रभवादिभिराचार्यैः, एतम्भावे ठिता एतातो वा सिद्धा बुद्धबोधितसिद्धा, दम्बलिंगं प्रति रजोहरणमुहपोत्तिपडिगहधारणं सलिंगं, एयंमि दम्बलिंगे ठिता सलिंगसिद्धाः, तावसपरिव्वायगादि कसयमादि दम्बलिंगठिता सिद्धा अण्णलिंगसिद्धा, एवं गिहिलिंगेवि केसादिअलं- करणादिए दम्बलिंगे ठिता सिद्धा गिहिलिंगसिद्धा, इत्थीलिंगंति इत्थीए लिंगं, इत्थीए उवलक्खणंति बुत्तं भवति, तं तिविधं-वेदो सरीर- णिव्विन्ती जेवत्थं वा, इह सरीरणिव्वत्तीए अधिकारो, ण वेदणवत्थेहिं, तत्थ वेदे कारणं जम्हा स्त्रीणवेदो जहण्णेणं अंतोमुहुत्तातो उक्कोसेण देसूणपुन्वकोडितो, जेवत्थस्स त अणियतत्तणतो, तम्हा ण तेहिं अधिकारो, सरीरकारणनिव्वत्ती पुण गियमा चेव उदयतो णामकमुदयाओ य भवति, तंमि सरीरणिव्वत्तिलिंगे ठिता सिद्धा तातो वा सिद्धा इत्थीलिंगसिद्धा, एवं पुरिसणपुंसगलिंगावि भाणियक्वा, एक्कसिद्धत्ति एक्कंमि समत्ते एक्को चेव सिद्धो, अणेगसिद्धत्ति एक्कंमि समए अणेगे सिद्धा दुगादि जाव अट्टमतंति, भणितं च-वत्तीसा अडयाला, सट्ठी बावत्तरी य सिद्धभेदाः ॥ १९ ॥

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [१९-२३] / गाथा [५९-६०]
प्रत सूत्रांक [१९-२३] गाथा ॥५९-६०॥ दीप अनुक्रम [८५-९२]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ २० ॥ बोद्धव्या । चुलसीती छणउती दुरहित अट्टुत्तरसयं च ॥१॥ चो० णणु एते पण्णरस भेदा विभेदठिता अण्णोण्णणिरवेक्खा ण भवंति, कथं पंचदस भेदन्ति पण्णत्ता ? आचार्य आह—णणु तित्थपुरिसविभागुप्पण्णणुप्पण्णा कालभेदयोर्वा दो भेदा परोप्परविरुद्धा, एगाणेगादि एककाल-सहचरित्तासहचरित्तत्तणओ भिण्णा, सयंबुद्धादयोवि णाणावरणस्सयोवसमविसेसा य पडिबोधविसेसत्तणओ, थीति विसिद्धा, एवं तित्थादिता-ण अण्णेण लक्खणसहावठिताणं पंचदस भेदा पण्णत्ता, किं च जहा भतिगाण० तत्थादियाण चरिमपज्जवसाणाणं अण्णोण्णणुवेक्खेन्ताण भेदो इदं पि जइ तथा तो को दोसो ? किं च- णाणाणयाभिप्पायत्तणत्तो सुत्तस्स य अणेगगमपज्जायत्तणतो अभिधाणभेदत्तणतो य पंचदस-भेदकरणंति ण दोसो । इदं पि तं चेव सिद्धकेवलणाणं समयभेदतो अणेगधा विसेसिज्जइ-पढमसमयसिद्धस्स जो बित्थियसमओ तंमि सिद्धो सो परो तस्सविय अण्णो एवं परोप्परसिद्धकेवलणाणं भाणियव्वं, तच्च अपढमसमय इत्यादि, नास्य प्रथमः समयो विद्यत इत्यप्रथमः, द्वितीयसमयसिद्ध इत्यर्थः, स च परंपरसिद्धविसेसणस्स प्रथमतः स परतो बित्थियादिसमया भाणितव्वा । तं सव्वं पि चअव्विहं दव्वादि, तं० सव्वदव्वा, दव्वत्ति धम्माधम्मागासादयो, तेहिं तो जीवदव्वा अणंतगुणा, तेहिं तो वि पुग्गलदव्वा अणंतगुणा, एते सव्वे सरूवतो जाणति, भावावि दुविहा-जीवाजीवा, खेत्तं पि लोगालोगभेदभिण्णमणंतरूवं जो जाणइ, कालं पि समयावलियादिगं तीयमणागतं सव्वद्वं सरूवयो सव्वं जाणति, भावावि दुविहा-जीवभावा अजीवभावा य, तत्थ जीवभावा कंमुदयसत्तत्तपरिणामितलक्खणा गतिकसायादिया कंमुदयलक्खणा अणेगविधा, उवसमस्सयस्सयोवसमजीवसत्तलक्खणा अणेगविहा, परिणामिया य जीवभन्वाभन्वत्तादिया, जिवेसु अमुत्तदव्वेसु धम्मा-धम्मागासा गतिठित्तिअवगाधलक्खणा अगारुलहुगा य अणंता, पुग्गलदव्वा य सुहुमवायरविस्ससापरिणता अट्ठिभदधणुमादिता अणेगविधा, परमाणुदुअणुगादीणविज्जाइपज्जवा एमादिता अणंता, एते दव्वादिद्या सव्वे सव्वद्वं सव्वत्थ सव्वकालं उवउत्तो सागाराणागारलक्खणोई सिद्धभेदाः ॥ २० ॥

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [२६-३७] / गाथा ६१-८०
प्रत सूत्रांक [२६-३७] गाथा ६१- ८० दीप अनुक्रम [९३- १२८]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ २५ ॥ वायधारणाठितं चतुर्भेयं, ‘अस्सुतणिसितं व’ ति जं पुण दव्यभावसुतणिरवेक्खं आभिणिबोधिकमुपपज्जइ तं अस्सुतभावतो समुपपण्णति असुतणिसितं भण्णति, तं च उप्पत्तियादिबुद्धिचउक्कं, इमे-‘पुव्व’० (*६२-१४४) गाहा भरह० (*६३-१४४) मधु० (*६४-१६५) गाहा, उप्पइया गता। इयाणि वेणइया ‘भरणि०’ (* ६६-१५९) ‘णिमित्ते’ (* ६७-१५९) गाहा ‘सीता’० (* ६८-१५९) गाहा ‘विणयसमुत्था०’ गाहा, इमा कम्मइया। ‘उवयोग०’ (* ६९-१६९) गाहा ‘हेरण्णि०’ (* ७०-१६४) गाहा, कम्मइता गता। इमा परिणामिया ‘अणु’० (* ७१-१६५) गाहा ‘अमए’० (* ७२-१६५) गाथा ‘खमण’० (* ७३-१६५) ‘चलण’ गाहा (* ७४-१६५) गाहा, एताओ सव्वाओ जया णमोक्कारे (अभिप्पाए) तथा दट्ठभा, इयाणि सुतणिसितं उग्गहाइयं सवित्थरं भण्णति, ‘से किं तं०’ (२७-१६८) इह सामण्यस्स रुवादिअसेसविसेसणिरवेक्खस्स अणिरसु अवमहणमवमहः तस्सेवऽत्थस्स विचारणविसेसेणेहणमीहा, तस्स विसेसणविसिट्ठस्स अवसातोऽवायः, तव्विसेसावगम इत्यर्थः, तव्विसेसावगमस्स धरणं अविरुत्तुती धारणा इत्यर्थः तत्थ ‘से किं तं उ०’ (२८-१६९) उग्गहो दुविधो-अत्थोग्गहो वंजणउग्गहो य, एत्थ वंजणोग्गहस्स पच्छाणुपुन्निवतो (अत्थोग्गहाइया) अत्थोग्गहातो वा पुव्वं वंजणुग्गहो भवइत्ति वंजणोग्गहमेव पुव्वं भणामि, ‘से किं तं वंज०’ (२९-१६९) वंजणाणं अवग्गहो वंजणोवग्गहो वंजणोग्गहो, एत्थं वंजणोग्गहणेण सहादिपरिणता दव्वा घेत्तव्वा, एत्थ वंजणोग्गहणेण दव्विदियं घेत्तव्वं, एतेहि दोण्हवि समासाणं इमो अत्थो-जेण करणभूतेण अत्था वंजिज्जंति तं वंजणं, जहा पदीवेण घडो, एवं सहाइपरिणतेहि दव्वेहि उवकरणे-दियपत्तेहि विस्सेहि संवट्ठेहि संपसत्तेहि जम्हा अत्था वंजिज्जइत्ति तम्हा ते दव्वा वंजणं, वंजणावग्गहो सुत्तसिद्धो चउव्विहो, ‘से किं तं अत्थोग्गहे’ अश्रुतनि- श्रितमामि- निबोधिकं ॥ २५ ॥

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [२६-३७] / गाथा ६१-८०
प्रत सूत्रांक [२६-३७] गाथा ६१-८० दीप अनुक्रम [९३-१२८]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः नन्दीचूर्णौ ॥ २६ ॥ (३०-१७३) इत्यादि सूत्रं, अत्थस्स उग्गहो अत्थोग्गहो, सो त वंजणावग्गहातो चरमसमयाणंतरं एकसमयं, अवि सत्थिदियविसयगिण्हतो अत्थुवग्गहो भवति, चक्खिदियस्स मणसो य वंजणाभावे पढमं चेव अविसिट्ठमत्थग्गहणकाले यो एगसमयं सो अत्थोग्गहो भाण्यव्वो, सव्वावि सो विभागेण छव्विहो दंसिज्जइ, ण पुण तस्सोग्गहस्स काले सदादिविसेसवुद्धी अत्थि, णोइदिओत्ति मणो, सो (दुविहो) दव्वमणो भावमणो य, तत्थ मणपज्जात्तिणामकम्मुदयातो जोगे मणोदव्वे येत्तुं मणजोगपरिणामिता दव्वा दव्वमणो भण्णइ, जीवो पुण मणपरिणाम-कक्रियावण्णे भावमणो, एस उभयरूवो मणदव्वालंबणो जीवस्स णाणव्वावारो भावमणो भण्णति, तस्स जो उव्वकरणमिदियदुवार-निरवेक्खो घडाइअत्थसरूवचित्तणो बोधो उप्पज्जइ सो वा णोइदियत्थोवग्गहो भवति ॥ तस्स (३१-१७४) घोसात्ति-उदत्तादिया सर-विसेसा घोसा भण्णति, वंजणंति अभिलावक्खरा, तेसि इमे एगट्ठिया चेव ओग्गेण्हणता इत्यादि, एते उग्गहसामण्णतो पंचवि गियमा एगट्ठिया, उग्गहाविभागे पुण कज्जमाणे उग्गहविभागंसेण भिण्णत्था भवन्ति, सो य उग्गहो तिविहो-विसेसावग्गहो सामण्णत्थावग्गहो विसेससामण्णत्था-वग्गहो य, एगट्ठिताण इमो भिण्णत्थो, वंजणोग्गहस्स पढमसमयपविट्ठाण पोगलाण गहणता ओग्गेण्हता भण्णति, आपल्लेतिकाउं, वितियादि-समयादिसु जाव वंजणोग्गहो ताव उव्वधारणता भण्णइ, एगसामग्गसामण्णत्थावग्गहकालो वेक्खणता भण्णइ, विसेससामण्णत्थावग्गहकालो अवेक्खणता भण्णइ, उत्तरुत्तरविसेससामण्णत्थावग्गहेसु जाव मेहया धावइ ताव मेघा भण्णइ, जत्थ वंजणावग्गहो णत्थि तत्थ सवणादिया तिणिण एगट्ठिता भण्णन्ति, आह--णणु भिण्णत्थत्ताओ एगट्ठितत्ति विरुद्धं, उच्यते, ण विरुद्धं, जतो विरुप्पेसु उग्गहस्सेव सरूवं दंसिज्जइ, इदाणं उग्गहसमणंतरं ईहा, (३२-१७५) सा छव्विहो मुत्तासिद्धा, इमे तस्सेगट्ठिता, तेवि ईहासामण्णतो एगट्ठिता चेव, अत्थविकप्पणतो पुण भिण्णत्था इमेण विधिणा, आभोअणता इच्छादि, उग्गहसमयाणंतरं सव्वभूयविसेसत्थाभिमुहमालोयणं अवग्रहेहा-पाय-धारणाः ॥ २६ ॥

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [२६-३७] / गाथा ६१-८०
प्रत सूत्रांक [२६-३७] गाथा ६१- ८० दीप अनुक्रम [९३- १२८]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ २७ ॥ आलोयणा भण्णति, तमेव धम्मणुगतत्थण्यवइरेगवससमालोयणा मग्गणा भण्णइ, तस्सेवत्थस्स वइरेगधम्मपरिच्चातो अण्ण- यधम्मसमालोयणं च गवेसणा भण्णति, तमेव धम्मणुगतत्थस्स पुणो पुणो समालोयणत्तेण चिंता भण्णइ, तमेव वत्थुं णिच्चाणिच्चाइएहिं दब्बभावोहिं विमारिसता वीमंसा भण्णइ, एवं बहुधा अत्थमालोगतं, तस्स उक्कोसतो अंतमुट्टत्तकालं सव्वा ईहा भवइ, ईहाणंतरं अवाओ, (३३-१७६) सो छव्विहो सुत्तासिद्धो, तस्मेगट्ठिता इमे पंच, ते अवायसामणत्तणतो णियसा एगट्ठिता चेव, अभिहाणाभिणत्तणतो पुण भिण्णत्था इमेण विधिणा आओज्जा, तेवि पुण तं जहण्णेणं अंतमुट्टत्तातो परतो दिवसादिकालविभागेसु, संभरंतो य धारणा भण्णइ (३४- १७६) ठवणत्ति ठावणा, सो अपायधारियं अत्थं पुब्बावरमालोइतं हिययंमि ठावर्यंतस्स ठवणा इति भण्णइ पूर्णघटस्थापनावत्, पति- ट्ठत्ति सेवि त अवधारियत्थो हितयंमि प्रभेदेन पइट्ठाइतमाणो पइट्ठा भण्णइ, जले उपलप्रक्षेपप्रतिष्ठावत्, कोट्ठेत्ति जथा कोट्ठगे सालिमादि बीया पक्खित्ता अविणट्ठा धारिवज्जंति तथा अवातोधारियमत्थं गुरुवदिट्ठसुत्तमत्थं वा अविणट्ठं धारणा कोट्ठगसंमत्तिकाडं कोट्ठेत्ति वत्तव्वो, इच्चे- तस्यादिसूत्रं, इति उपप्रदर्शने, एतस्सत्ति जं अतिकंतं अट्ठावीसतिभेदं, ते य के अट्ठावीसति भेदाः, उच्यते, चउव्विहो वंजणावग्गहो छव्विहो अत्थावग्गहो छव्विधा ईहा छव्विधो अवायो छव्विधा धारणा, एते सव्वे अट्ठावीसं, एयस्स अट्ठावीसइविहस्स सज्झातो जो वंजणाभिग्गहो चउव्विहो तस्स दिट्ठंतदुगेण परूवणा, 'से जहा णामे' (३६-१७७) इत्यादि, सत्ति पडिबोधकस्स णिदेसे, जहा णामयति जहा णाम संभवतः, आत्माभिप्रायकृतादित्यर्थः, सव्वणुपणीयमत्थं तदणुसारि सुत्तं वा अप्पबुद्धिविण्णत्तण्यो अणवगच्छमाणो सीसो पुच्छाचोयणातो चोदको, अहवा तमेव सुत्तमत्थं अवग्रहाद्ये- कार्थः ॥ २७ ॥

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [२६-३७] / गाथा ६१-८०
प्रत सूत्रांक [२६-३७] गाथा ६१- ८० दीप अनुक्रम [९३- १२८]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ २८ ॥ वा घडमाणं विभिण्णमाणो तद्दोसचोद्गतो चोदओ भण्णति, पवयणमविरुद्धं णिहोसं सुत्तत्वं पण्णवैतो पण्णवगो, विरुद्धदुत्तमुत्तं वा अत्थतो अविरुद्धं दरिसेतो पण्णवैइ जो सो वा पण्णवगो भण्णति, यथावत् संसयच्छेरीत्यर्थः, चोदको संसयमावणो पण्णवगं पुच्छइ-‘किं एगसमयादिपविट्ठा’ इत्यादि, कंठर्थं, एवं चोदकं पुच्छामिप्पाएण वदंतं पण्णवगाह-णो एगसमयपविट्ठा इत्यादि, जो एस पडिसिद्धो सो ता एस सदाइफुडविण्णाणजणगत्तेणंति णो गहणमागच्छति, इहरा पोगगला गहणमागच्छंत्येवेत्यर्थः, एवं एगादिसमयपविट्ठपोगगलपडिसिद्धेसु इमा अणुण्णा असंखेज्जसमयपविट्ठा पोगगला गहणमागच्छन्ति, इमस्स अणुयोगत्थो अणुयोगिणाऽवसेयो, तत्थ अणुयोगे इमो-जहा पवासी से गिहमन्तो अट्ठाणं पंचाहेण सत्ताहेण वा बीतावत्तिता सगिहं पविट्ठत्ति, एवं असंखजेहिं समयेहिं आगता पविट्ठा कण्णपेहेसु पोगगला गेहइति, एवं अणुयोगो भवति, इमो अणुयोगत्थो-पढमसमयादारब्धं बितियाइसमयं पविसमाणेसु असंखेज्जइमे समए पविट्ठा ते गहणमागच्छन्ति, ते य सदादिविण्णाणजणगत्तिकारं, अतो तेहिं गहणमुवविट्ठं, सो य असंखेज्जइमे समयो किंपमाणे असंखेज्जए भण्णति ?, उच्यते, जहण्णेणं आवलियाअसंखेज्जभागमेत्तेसु समतेसु गतेसुत्ति, उक्कोखेणं संखेज्जासु आवलियासु आणपाण-कालपज्जन्ते वा, उभयधावि अविरुद्धं, गतो पडिवोधकदिट्ठंतो, जत्थ आवागसीसगंति-पागट्ठाणस्स वा अहवा आपागट्ठाणस्स आसण्णं संगता परिपेरंतं, अहवा आपागस्सुत्तरियाए जं ठाणं तं आपागसीसयं भण्णति, अणंतेहिं प्रथमसमयादारब्धं प्रतिसमयं अणंता प्रविशंतीत्यतो अनंता, जाहे तं वंजणं पूरियं भवइत्ति, एत्थं वंजणग्गहणेण सदाइपुगलदव्वादि दव्विंदियं वा उभयसंबंधो वा पेत्तव्वं तिधावि ण विरोधो, वंजणं पूरियंति कथं ?, उच्यते, जदा पुगलदव्वा वंजणं तया पूरियंति पभूता ते पोगगलदव्वा जाता अप्रमाणमागता स विनेयपडिवोध-समत्था जातेत्यर्थः, जया पुण दव्विंदियं वंजणं तया पूरियंति कहं?, उच्यते, जाहे तेहिं पोगगलेहिं तं दव्विंदियं आफुअं भरितं वावितं तया प्रतिबोधक- मल्लक- दृष्टान्तौ ॥ २८ ॥

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [२६-३७] / गाथा ६१-८० 	
प्रत सूत्रांक [२६-३७] गाथा ६१- ८० दीप अनुक्रम [९३- १२८]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ २९ ॥ पूरियन्ति भण्णइ, जया उ उभयसंबंधो वंजणं तथा पूरियन्ति कथं?, उच्यते, दन्विदियस्स पुग्गला अंगीभावमामता पुग्गला य इत्थिदिए अनु- पक्ता, एस उभयभावे, एतमि उभयभावे पोग्गलोहिं इंदियं पूरियं, पूरितं इंदिएण विसयपडिबोधकपमाणा पोग्गला गहिया, एवं उभयसाम- त्यतो विण्णाणभावो भवतीत्यर्थः, हुन्ति करेइत्ति वंजणे पूरिते तं अत्थं गेण्हइत्ति उत्तं भवइ, एस एकसमयितो अत्थावग्गहो, तं पुण किं- पतारं?, उच्यते, णो चेव णं जाणति केव एस सहादी, तक्काले सामण्णमणिहेसं सहाइवि, से ण सहाइत्तिजाणइत्ति वुत्तं भवइ, किं च सरूव- णामजातिगुणकिरियाविमुहं तमवि नारूयेयं गृह्णातीत्यर्थः, एत्थ पडिबोहकालातो पुव्वं वंजणोग्गहस्स परूवणत्ति कया, वंजणोग्गहस्स परतो हुंति करेत्ति, तंमि पडिबोधकाले एगसमइओ अत्थावग्गहो संभवइ, ततो से कमेण ईहावायधारणातोत्ति, इत्थ पडिबोधमल्लग- दिट्ठेहिं वंजणोग्गहस्स भिण्णकालता फुडे दंसिता, पर आह-साधु चेव पडिबोधमल्लगदिट्ठेहिं वंजणत्थावग्गहाण भेदो दंसितो, जागरतो पुण सहाइअत्थे पडुप्पणे ण वंजणोग्गहो लक्खिज्जइ जतो पुव्वमेव सहाइअत्थविण्णाणमुप्पज्जते, भणितं च सुत्ते ‘से जहा णामए केइ पुरिसे’ इत्यादि, अथवा इमस्स सुत्तस्स इमो संबंधो, पर आह-सरूवणामजातिद्रव्यगुणक्रियाविकल्पविमुखं अनाख्येयं गृह्णाति तं विरुध्यते, कुतः?, यतः सूत्रेऽभिहितं ‘से जधा णामए’ इत्यादि सूत्रं, वा इतो संबंधो-सुप्रतिबोधकमल्लगदिट्ठेहिं वंजणत्थावग्गहाण भेदे दंसिते इह पुण सुत्ते मल्लगदिट्ठेण वा वंजणत्थावग्गहाण भेदो दंसिज्जइ ‘से जहा णामए’ इत्यादि सुत्तुच्चारणसवणांतरमेव पर आह-एत्थ सुत्ते वंजणत्थवग्गहेहा ण लक्खिज्जति, जतो अव्वत्तं सहं सुणेइत्ति भणितं, सहमेत्तेऽवधारिते पढमतो अवाय एव लक्खिज्जति, आयदिय आह-ण तुमं सुत्ताभिप्रायं जाणसि, णणु अव्वत्तसदसवणा ते अत्थावग्गहाणं कतं, जतो अव्वत्तमणिहेसं सामण्णं विक्खपरहियन्ति भण्णइ, तस्स य पुव्वं वंजणावग्गहेणं भवितव्वं, जतो एतग्गहिणो सोतादिदियस्स अत्थावग्गहो वंजणावग्गहमेतरेण ण भवइत्ति णियमेण सो, सो य प्रतिबोधक- मल्लक- दृष्टान्तौ ॥ २९ ॥	

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [२६-३७] / गाथा ६१-८० 	
प्रत सूत्रांक [२६-३७] गाथा ६१- ८० दीप अनुक्रम [९३- १२८]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ३० ॥ कालसुदृढमन्तणतो उप्पलसत्तपत्तछेज्जदिट्ठतेण ण लक्खिज्जइत्ति, चोदक आह-अति एवं तो जं सुत्ते भाणितं से त णं सहेति उग्गहिते तं कथं?, उच्यते, इह च तेणं सहेति उग्गहिपात्ति वक्का-सूत्रकारोऽभिधत्ते, इतिकरणणिहेसा, से सव्वविसेसविमुहं शब्दमात्रमुक्तं भवति, णो चेव णं जाणति के वेस सहेत्ति, ण तु शब्दोऽयमित्यर्थः, कम्हा ?, उच्यते, एकसमयतो अत्थावग्गइस्स, किं च-पण्णवन्तो अ पण्णवगो संववहाराभिप्रायतो तेण सहेत्ति उग्गहितेत्ति वृत्ते ण दोसो, जति वा शब्दोऽयमिति बुद्धी भावतो अवातो चेव भवेत्तत्थ, कथं ?, उच्यते, णो जतो अत्थावग्ग-हमेत्ते काले सइइति विसेसणाणमत्थि, अवातमितिसमितो सरोऽयमिति बुद्धी हवेज्जा, तो फुहं अवातोऽयं एव हवेज्जा, णो य तक्काले अवातो इच्छिज्जइ, जतो अत्थपरिच्छेतो असंखेज्जसमयकालितो भवइत्ति, अण्णे पुण आयरिता एयं सुतं विसेसत्थावग्गहे भणंति, अव्वत्तं सइं सुणेज्जत्ति एस विसेसत्थावग्गहो, तेण सहे उग्गहितेत्ति एतं सुत्तखंडं सामण्णस्सत्थावग्गइस्स दंसतं, कथं ?, उच्यते, जतो भण्णइ-णो चेव णं जाणइ केव एस सहेति, संखसंगणादिकरयत्तादिकोऽस्ति, एसोवि अविबुद्धो सुत्तत्थो, ततो अत्थावग्गहसमयाणंतरे पढम-समयादिसु ईहं पुण पविसइ, ईहत्ति केइ संसयं मण्णंति तं ण भवति, संसयंस्स अण्णाणभावत्तणतो, मइणाणंसो य ईहत्ति, आह-को पुण संसयेहाण विसेसो ?, उच्यते, इह जं थाणुपुरिसादिअत्थेसु पविट्ठं चित्तं तद्धं पडिचोदतेण पडिहं सुतइव चेतो संसतो भण्णति, तं च अण्णाणं, जं पुण हेतुववत्तिभावणेहिं सव्वभूयमत्थस्स विसेसधम्मभिमुहालोयणंति सव्भावइस्स अब्बगमविमुहं असंमोहमविकल-मत्थपरिच्छेदकं चित्तं जं तं ईहा भण्णति, अणुत्ति वग्गहातो पच्छाभावे असंखेज्जसमइयं परिणामतो ईहोवयोगं अविच्छेयत्तणतो अंतमुहुत्त-कालं ईहा इति, ततो विसिद्धमइणाणखयोवसमभावत्तणतो अंतमुहुत्तकालं ईहा इति, ततो विसिद्धमइणाणखयोवसमभावत्तणतो अंतमुहुत्त-कालवन्तर एव जाणति अमुए एस सरो संखसंगादिपत्ति, दुरवबोधत्तणतो पुण अत्थस्स अविसिद्धमइणाणखयोवसमत्तणतो वा ईहोवयोगे अवग्रहेहा- पाय- धारणाः ॥ ३० ॥	

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [२६-३७] / गाथा ६१-८०
प्रत सूत्रांक [२६-३७] गाथा ६१- ८० दीप अनुक्रम [९३- १२८]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णी ॥ ३१ ॥ अतोमुहुत्ते वुत्ते अणवगतत्थो पुणेवि अण्णं अंतमुहुत्तं ईहेते, एवं ईहोवयोगऽविच्छेयसंताणतो बहुएवि अंतमुहुत्ते ईहेज्जा, ण दोसो, ततो ईहाणंतंरं अवातो, सो य सहाइअत्थपडुप्पणस्स जे परधम्मा तेसु विमुहस्स सधम्मे य अवधारयतो ण एस संगजो णिद्धमधुरगंभीरत्तणतो संखसहोऽयमिति, एवमवगतत्थो असंखेज्जसमइतो उक्कोसतो एसातामुहुत्तिते यो अवबोधो यो एस अत्थपरिच्छेदो सो अवाओ भवति, ततो अवाताणंतंरं धारणं परिस इति, सा य धारणा जहणतो असंखेज्जसमते अविचुतीए तमत्थं धरंति, उक्कोसतो अंतमुहुत्तो, अणुवयोगतो पुण तमत्थं विस्मृतं पुणेवि संभरे इति धारणा, एवं सा संखेज्जवासाउयाणं मुहुत्तदिवसादिकालसंखाए संखेज्जं कालं हवेज्ज, असंखेज्ज-वासाउयाणं पुण असंखेज्जं कालं हवेज्ज, एवं चक्खिदिणिवि रूवं भाणितव्वं वंजणावग्गहवज्जं, घाणरसफासिदिणसुवि जहा सोइदिते तथा सव्वं भाणितव्वं, संवेदेज्जति, एते सहादि इंदियत्थे पडुप्पणो इंदियं स्वं स्वं इंदियत्थं आअखयोवसमणुरूवं सुभमसुभं वा वेदेज्जति, एते सहाई चक्खुइंदियवज्जं सेसिदिणिं पत्तमिंदियत्थं प्रायसो इट्ठमणिट्ठं वा स्वं आत्मानमनुगतं वेदनं वेदते न सरीरेण अनुपलंभं वा वेदय-तीत्यर्थः, फासिंदियत्थं पुण स्वं अनुगतं सरीरानुगतं च दुधावि कुडं वेदेज्जइति संवेदेज्जति, अतो भाणितं परं मणसो सुविणंभि सहातिविस-तेसु अवग्गहादयो गेयव्वा, इंदियवावाराभावे मणो माणसिते इह सुत्तेण णियंसणं मणे, से जप्पा णामए इत्यादि सुत्तं कळ्यं, सुविणंभि दिट्ठं अव्वत्तं सुमरइ, प्रविबोधप्रथमसमये सुविणमवि संभरतो अत्थावग्गहो, तस्य प्रथमावस्थायां व्यज्जनावमहः, परतोऽन्य ईहादिसव्वः पूर्ववत्, जग्गतो अणिंदियत्थवावारेवि मणसो युज्यते वंजणावग्गहो, उवयोगस्स असंखसमयत्तणओ, उवयोगद्वाए य प्रतिसमयमणोवव-ग्गहणओ मणोवव्वाणं व वंजणववदेसतो समए य असंखेज्जइमे ममसो नियमार्थं ग्रहणं भवे, तस्य च प्रथमसमयप्रतिबोधकालोऽर्थोवमहः तस्य पूर्वमसंखेयसमयस्तु व्यज्जनावमहः, शेषमीहादि पूर्ववत्, सीसो पुच्छइ-उग्गहादीणं उवक्कमो, एगयरअभावे वा किं सहादिवत्थुपरि- अवग्रहेहा- पाय- धारणाः ॥ ३१ ॥

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [२६-३७] / गाथा ६१-८०
प्रत सूत्रांक [२६-३७] गाथा ६१- ८० दीप अनुक्रम [९३- १२८]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ३२ ॥ च्छेतो न भवति ? , आचार्याह-आमं न भवति, अत एव च क्रमे नियमः, जम्हा णो अणहिगयं ईहइ, तम्हा पुठ्वं उगगहो, जम्हा अणीहितं णोऽवगच्छइ ईहाणंतरं तम्हा अवातो, जम्हा य अणावायं ण धारिज्जइ वत्थुं अवायाणंतरं तम्हा धारणा, जम्हा य एस क्रमणियमो तम्हा सव्वे आभिणिबोधियणाणवगसा णियमा एव भवति, अत एव कारणा सव्वे अवगगाहादयो मइणाणभेदा भवन्तीत्यर्थः तं च मतिणाणं समासतो चउच्चिहेत्यादि (३७-१८४) सुत्तं, तं च मतिणाणं खयोवसमरूवतो एगविधंपि होतं णेतभे- तत्तणतो से णाणभेदा दव्वादिआ से भवन्ति, दव्वतो वत्तव्वो, णंदि वयणाळंकारे, देसीवयणतो वा णं, अथवा अपादानत्ते पंचमी विभक्तिः, तत्थपायाणभावातो दव्वतो णं, एवं आभिणिबोधितणाणी लभति ‘आदेसेण’ इत्यादि, इहादेसो नाम प्रकारोऽसौ त सामण्णतो विसेसतो य, तत्थ दव्व० जातिसामण्णादेसेणं सव्वदव्वाणि धम्मत्थिकायादियाणि जाणति, विसेसदव्वेवि, जधा धम्मत्थिकायो धम्मत्थिकायदेसे धम्मत्थिकायस्स पदेसेत्यादिके य जाणति, भावे य जाणति जधा सुहुमपरिणता अवि सतत्था उप्पण्णवण्णादिया, ण पत्तइत्ति सव्वे साम- ण्णविसेसा, दसविहे धम्मादिप, चक्खुदंसणेण रूवसहाइतो केसि पासइत्ति वत्तव्वं, अहवाऽऽदेसो सुत्तं, तेणादेसतो सव्वदव्वे जाणति इत्यादि, चोदक आह-जति सुत्तं कथं मतिणाणंति ? , उच्यते, सुतोवल्लट्ठेसु अणुसरतो तम्भावणबुद्धिसामत्थओ सुतोवयोगनिखेक्खावि मतिपच्चतइ- त्ति ण सुतादेसेवि ण (सु) ज्जइ, तो खेत्तंपि सामण्णविसेसादेसतो, तच्च सामण्णतो खेत्तमागासं, तं चेव सव्वगतममुत्तं अवगाइल्लक्खणं सव्वं जाणंति, विसेसतोवि लोगुद्धहतिरियाइविसेसे खेत्ते जाणति, ण जाणइ य, केवि क्षेत्रं न पश्यत्येव, काळेवि आदेसो सामण्णविसेसतो, तत्थ सामण्णतो इमं भण्णइ, ण य दरिसणवो, णेव या सुतमणुसुत्तं वा कलासमूहं, सच सव्वाणि वा कलेइत्ति कलणं वा कलितमेवंविधं सव्वकाले जाणति, विसेसादेसे समयावलिप्पादि ओसप्पिणमादि वा विसेसकालो, के य जाणति न जाणति केवि, कालं न पश्यत्येव, भावे इति भवन् द्रव्यादि- भिर्मतिः ॥ ३२ ॥

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [२६-३७] / गाथा [६१-८०]
प्रत सूत्रांक [२६-३७] गाथा [६१- ८०] दीप अनुक्रम [९३- १२८]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ३३ ॥ भूविर्वा भावः एवं सव्वभावे, भावे जातिमित्तसामण्णतो जाणति, विसेसादेसतो जीवाजीवभावे, तत्थ णाणकसावादिआ जीवे, अजीवे वण्णपज्जवादिअ अणेगहा वीससयजोगपरिणता, एत्थ विज्ञाणविसयत्था जे ते जाणति पासति, सेसे ण याणइ, सव्वभावे ण पाछइ मतिणाणस्स असव्वण्णेयविसयत्तणओ, ‘उग्गह ईह’ गाथा (#७५-१८४) ‘अत्थाणं’ गाथा (#७६-१८४) ‘उग्गह एक्कं’ (#७७-१८४) गाथा ‘पुट्टं सुणाई’ गाथा (#७८-१८४) ‘भासा’ (#७९-१८४) गाथा ईहा गाथा (#८०-१८४) एताओ गाथातो जहा पेढियाए तह भणि- यव्वा इति सेतं मतिणाणंति, एस आदीए जा पुच्छा तस्स सव्वहा सरूवे वणिणेत इमं एरिसंति दंसं गं णिगमणवाक्यं से तं मतिणाणं- ति, अथवा सीसो पुच्छति-जो एस वणिणतसरूवेण ठितो णाणाविसेसो सो किं वत्तव्वो?, आचार्याह-‘से’ इति णिरेसे तंति-पुव्वपण्हामरिसणे तं-एतत् मतिणाणंति स्वनामाख्यमित्यर्थः, अहवा सेत्ति अस्य व्यंजने लोपे कृते एतं मतिणाणंति भणति, एतावत् मतिज्ञानमित्यर्थः ॥ इयमणि सव्वचरणकरणक्रियाधारं जहुहिट्टं कमापण्णं सुतणाणं भणइ— ‘से किं तं सुतणाणं’ मित्यादि, (३८-१८७) तं च सुतावरणखयोवसमत्तणतो एगविधंपि तं अक्खरादिभावे पडुक्ख अंगवाहिराति- चोइसविहं भणइ, तत्थ अक्खरं त्रिविधं, तं-णाणक्खरं अभिलावक्खरं वण्णक्खरं च, तत्थ णाणक्खरं ‘ खर संचरणे ’ न क्षरतीत्यक्षरं न प्रच्यवते अनुपयोगेऽपीत्यर्थः, अभिलावणतो तं च णाणं से सतो चेतनेत्यर्थः, आह-एवं सव्वमपि सेसं तो णाणमक्खरं, कम्हा सुतं अक्खरमिति भणइ ?, उच्यते, रूढिविसेसतो, अभिलावणा अक्खरं भणितो, पंकजवत्, एवं ताव अभिलावहेतुत्तणतो सुतविण्णाणस्स अक्खरया भणिण्या, इयमणि वण्णक्खरं वणिज्जइ-अणेणाभिधिता अत्था इति वाऽत्थस्स वा वाच्यं चित्रे वर्णकवत् अहवा द्रव्ये गुणाविशेषवर्णकवत् वर्ण्यतेऽभिलप्यते तेन वर्णाक्षरं, एत्थ सुत्तं ‘से किं तं अक्खरं’ (३९-१८७) एत्थ सुत्तं, तस्माक्षरं त्रिविधं-सण्णक्षेत्यादि, अक्खरसहं सुणतो मतिः श्रुतं च ॥ ३३ ॥
	अथ श्रुतज्ञानस्य वर्णनं आरभ्यते

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [३८-४३] / गाथा [८१]
प्रत सूत्रांक [३८-४३] गाथा [८१] दीप अनुक्रम [१२९-१३६]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ३४ ॥ भासतो वा अक्षरसुतं, तत्क्षरलंभे अभिलावे वा द्बसुतं, खयोवसमलद्धी भावसुतं, तच्चाक्षरं त्रिविधं सण्णक्षरादि, तत्थ सण्णक्षरं अक्षरागाराविसेसो, सो य ब्रह्मादिलिविविधाणो अणेगविधो आगारो, तेषु आगारेसु जम्हा अकारे अकारस्सण्णा एव भवति, एवं सेसेसुवि, तम्हा ते सण्णक्षरा भणिता, जहा वट्टं घनागारं द्बवं वगारसण्णा उप्पज्जतीत्यर्थः, व्यक्तिकरणं वंजणं, व्यज्यते अनेनार्थे इति वा व्यजनं, यथा प्रदीपेन घटः, व्यजनं च तदक्षरं च व्यजनाक्षरं, सचेह सर्वमेव भाष्यमाणं अकारादि हकारंतमर्थाभिच्यंजकत्वात्, से- सि सतमेव अक्षरं अर्थाभिच्यंजकं भवति जहा घटं इत्यादि, लद्धक्षरंति-अक्षरलद्धी जस्सत्थि तस्स इंदियमणोभयविण्णाणतो इह जो अक्षरलाभो उप्पज्जइ तं लद्धिअक्षरं, तं च पंचविधं-सोतेंदियादि, जधा सोइंदियलद्धितो सहं सोढुं संख इति अक्षरदुतलाभो भवति, एवं सत्वं लद्धिअक्षरं भाणियत्वं, इह सण्णावंजनक्षरे दोवि द्बसुतं संगहितं, सुत्तविण्णाणकारणत्वातो, लद्धक्षरे तु भावसुतं, लद्धीए विण्णाणमयत्तणतो, भवणा वा । इयाणि अणक्षरसुतं; अणक्षरसहसवणतो कारणतो वा अणक्षरसुतं भवति, तं च अणेगविहं इमं-‘ऊस-सितं’ गाहा (*८१-१८७) पूर्ववत् कंठ्या ॥ इयाणि साण्णिमसण्णिस्स सुतं, ‘से किं तं सण्णीसुतं’ इत्यादि (४०-१८९) तत्र संज्ञाऽस्यास्तीति संज्ञी, सो य सण्णी ति विधो कालितोवदेसेण इत्यादि, चोवक आह- जइ सण्णासंबंधयो सण्णीतो, सत्वे जीवा सण्णीं जतो एगिंदियाणवि दस आहारादिसण्णातो पठिज्जति, आचार्याइ-इह ओहसण्णा योव- त्तणतो नाधिक्रियते, जहा णो करिसावणेण धणवं भवइति, सेसाहारासण्णादितोवि भूयिष्ठतरावि नाधिक्रियते, अणिट्त्तणतो, जहा वा इह- संठिते ण सुत्तणतो रुववं भण्णइ, एते अधिकतसण्णाण अनुवणयदिहंता, इमो उवणयदिहंता, जधा बहुधणो धणवं पसत्थणिव्वसियदेह- मुत्तित्तणतो य हववं भण्णति, तथेह महती सुभा य संज्ञाधिक्रियते, सा य संज्ञा मनोविज्ञानं, तत्संबंधात्सण्णीत्यर्थः, उक्तः प्रसंगः, श्रुतज्ञानं ॥ ३४ ॥

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [३८-४३] / गाथा ॥८१॥
प्रत सूत्रांक [३८-४३] गाथा ॥८१॥ दीप अनुक्रम [१२९- १३६]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ३५ ॥ प्रकृतमुच्यते-कालितोवदेसेणति, इहापि पदलोवो दृढवो, तस्सुचरणा दीहकालितोवएसेणति वत्तव्वं, दीहमायतं कालितोति विसे- सणं, कस्स ? उवदेसस्स, अहा जिणभवणमुदुत्तकालितो दीहकालितो वा पूयामडवो कयो, तहा दीहकालितोवदेसेणति भणितव्वो, उवदेसणमुवदेसो, उवदेससि वा पणवणति वा पणवणसि वा एगट्ठा, दीहकालितोवदेसो तेण दीहकालितोवएसेणं जस्स सण्णा भवति सो य आदिपदलोवातो कालितोवतेछेणं सण्णीत्यर्थः, अथवा कालियं आयारादिसुत्तं तदुवतेसेणं सण्णी भवति, सो य असरिसो जो अतीतकाले सुदीहेवि इदं तदिति कृतमणुभूतं वा सुमरति, वट्टमाणे य इन्दियणोइदिणं य अण्णयरं सहाइअत्थमुवल्लं अण्णयरंइरेगधम्मेहिं इहेत्ति- इहा तस्सेव परधम्मपरिओगो सधम्मणुगमभावधारणे य अवोहोत्ति, अवातो विसेसधम्मणोसणं, मगगणं-जहा मधुरगंभीरत्तणतो एस संख- सइ इति, बीमंसमुपयोगमभा णिच्चमणिच्चं इत्यादि, गवेसणा जो अणागते य चित्तयति, कइं वा तं तत्थ कायव्वमिति, अण्णोण्णाळव- णाणुगतं चित्तं चित्ता, आतपरइहत्था य हिताहियविमरिसो बीमंसा, अथवा किमेतति इहा, णिच्छयावधारितो अत्थो अवोधो, अभिलसइ- यत्थस्स मणोवयणकाण्हिं ओगो मगगणा, अभिलसियतत्थे खेव अपडुच्चमाणो गवेसणा, अणेगधा संकप्पकरणं चित्ता, इंदमर्थे तु बीमंसा, जहा णिच्चमणिच्चं हितमहितं दूरं कइं थोवं बहु इच्छादि, अथवा संकप्पतो खेव तिथिधो-आमरिसणा बीमंसा अहवा अपोहोत्ति अवातो सेसा इहा एगट्ठिया, जेणेवं अण्णयरविकप्पेण मणोदव्वमणुगतं चित्तं वा वत्तति एस कालितोवदेसेणं सण्णासि, सो य अणंते मणोजोगे खंधे घेत्तुं मणेति एस लद्धिसंपण्णो मणविण्णाणावरणखयोवसमहेतुत्तणतो य जहा चक्खुमतो पदीवादिप्पगासेण फुड्डा रूवोवल्लडी भवइ तहा मणखयोवसमलद्धिमतो मणोदव्वपगासेण मणोल्लहेहिं इदिण्हिं फुड्डमत्थमुवल्लभतीत्यर्थः, कालितोवदेससण्णी, विक्खे असण्णी, जह वेह अविमुद्धचक्खुमतो मंदमंदप्पगासा रूवोवल्लडी असुद्धा, एवं संमुच्छिमपंपिदियस्स विसण्णस्स उक्कोसखयोवसमेवि अप्पमाणा, दव्वगाहण- संशयसंज्ञि- श्रुतं ॥ ३५ ॥

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [३८-४३] / गाथा ८१
प्रत सूत्रांक [३८-४३] गाथा ८१ दीप अनुक्रम [१२९-१३६]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ३६ ॥ सामर्थ्यपरिणामत्तणो य असण्णिणो अविसुद्धमप्पा य अत्थोपलब्धीत्यर्थः, ततोऽविसुद्धा चतुर्दिश्याणं ततो वेइंदियाणं ततोऽविसुद्धा वेइंदियाणं सुत्तुवळ्ळी, जस्स इंदिया स तथा, तेसु अ वगा(रसा)दिसु पवत्ततो विगालेंदियाणवि, आदेसंतरतो मणोद्वग्महणं असुद्धमपत्तणतो य भणियं, सो य मणो तेसिं चैव अमणो दट्ठवो, असुद्धत्तणतो अशीलवत् अधनवद्वा, तथा वेइंदियाहिंतेवि समीवातो अवत्तत्तरं विण्णाणं जधा मत्तमुच्छियविस्सभावितस्स य तथा एगेंदियाणं सव्वहा मणाभावो विण्णाणं सव्वजहणं कालितोदेससण्णिणो, एते संमुच्छिमादयो सव्वे असण्णीणो भवंतैत्यर्थः, इदार्णि हेतूवदेसेणंति-हेतुः कारणं निमित्तमित्यनर्थान्तरं, उवदेसेणंति पूर्ववत्, हेतुत्ततो सण्णी भवइत्ति, जेण हेतुओवदेसेणं सण्णी भवति, जस्सत्ति जीवस्स णं वा अलंकारे देसीवयणतो वा, आत्मस्वरूपप्रदर्शने वचनोपन्यासे वा, अव्यक्तेन विज्ञातेन अभिसंधाय पूर्व ततः विज्ञानस्येव करणशक्तिः करणं क्रिया शक्तिः-सामर्थ्यं अथवा करणे शक्तिः करणशक्तिः अथवा करण एव शक्तिः करण-शक्तिः तच्च अभिसंधाकरणं संचित्य संचित्य इहेसु विसयतन्वत्थुसु आहारादिसु प्रवर्त्तते, अणिट्टिसु तु गियत्तते, एवं सदेहपरिपालणहेतो पवत्तति, ते य पायं पट्ठप्पणकालमतीयाऽणागतकालावलंबि नो भवति, उस्सण्णमेयं, केचित्तु तीताऽणागतकालावलंबिणोवि तं भवति, तेसुवि आगतो सुहुमो संताणचोदको अविस्सरणहेतू दट्ठवो, एवं तेसिं विकलेंदियाणं संमुच्छिमपंभेंदियाणं हेतुवायसण्णा भणिता, ते पडुरुच असण्णी जे णिच्चिह्वा इट्ठाणिट्टविसयविणियट्ठावारा मत्तमुच्छियविसोपमुत्तादिसारित्थवेयणट्टिया, पुढवादि एगेंदिया इत्यर्थः, इयार्णि दिट्ठिवातोवदेसेणंति, दट्ठिदेशनं वदनं वादः उपदेशनमुपदेशः इत्यनेन दट्ठिवादोपदेशेन संज्ञीत्वभिधीयते, सो य सम्मदिट्ठिसण्णी तस्स सम्मदिट्ठिणो सण्णिस्स जं सुतं तेण सण्णिसुतखयोवसमभावेण जुत्तत्तणतो दिट्ठिवातसण्णी लब्धमति, अह्वा दिट्ठिवायसण्णिमिच्छ-त्तस्स सुयावरणस्स य खयोवसमेणं कतेण सण्णिसुतस्स लंभो भवति, एवं सो दिट्ठिवायसण्णी लब्धमति, तस्स सुतं दिट्ठिवातसण्णिसुतं इत्यर्थः, संस्थसंज्ञि- श्रुतं ॥ ३६ ॥

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [३८-४३] / गाथा ८१
प्रत सूत्रांक [३८-४३] गाथा ८१ दीप अनुक्रम [१२९-१३६]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ३७ ॥ तं खयोवसमितभावत्थं सम्मदिद्धि पडुच्च मिच्छदिद्धि असण्णी भणितो, सो तं मिच्छत्तसुदयतो असण्णी भवति, तस्स सुत्तं च सुयभण्णा- णावरणखयोवसमेणं लब्धमति, एवं दिट्ठिवायअसण्णीत्यर्थः, तस्स सुत्तं दिट्ठिवातअसण्णिणसुत्तं, एवं दिट्ठिवाते सण्णिअसण्णिणसु सुतस्सयोवसम- भावसुत्तं खेत्तव्वं इति । पर आह-खयोवसमभावठितो सण्णिणत्तणतो लक्खिज्जइ, खाइगभावठितो केवलं किण्ण सण्णिणत्ति?, उच्यते, अतीवभा- वसरणत्तणतो य पडुप्पण्णभावाण पवुज्जमणतो अणामतभावचित्तणतो य सण्णिणत्ति, जिणे अणुसरणं णत्थि, जिणेसा सव्वदा सव्वथा सव्वत्थ सव्वभावे जाणतीत्यर्थः, तन्हा केवली णोसण्णीणोअसण्णी भवति, पुनरप्याह परः-इह मिच्छदिट्ठिणोवि केवि हिताहियणाणवा वारसण्णासं- जुत्ता दीसंति, किं ते असण्णिणो भणिया ?, उच्यते, तस्स जा सण्णा सा जतो कुत्तिता, जहिइ कुत्तितं वयणमवयणं कुत्तितचीलमसीलं वा, तथा तस्स सण्णो कुत्तितत्तणतो असंजैव दट्ठवा, अण्णं च तस्स मिच्छत्तपरिगहतो णाणमण्णाणमेव दट्ठव्वं, भणितं च सदस्रदविसेसणां गाथा कंठ्या, एवंपि ते असण्णी, आह-एगिदियाणं ओहसण्णा तदप्पत्तातो ते असण्णी चेव, तेहिंतो बेंदिया जाव समुच्छिमपंचेंदी एतोसिं दूरतरसण्णीए हेतुवायसण्णी भणितो, कालितोवदेसं पुण पडुच्च तेवि असण्णी, विण्णाणाविसिद्धत्तणतो, दिट्ठिवातोवदेसं पुण पडुच्च कालितो- वदेसावि असण्णी, अविसिद्धत्तणतो चेव, अतो णज्जइ दिट्ठिवायसण्णी सव्वुत्तमो, सुत्ते य उवरिद्धवितो, जुत्तमेतं, कालियहेतुसण्णीणं पुण उक्कमकरणं, कम्हा ?, उच्यते, सव्वत्थ सुत्ते सण्णिणग्गहणं जं कतं तं कालितोवदेससण्णिस्स, अतः सव्वं तत्संव्यवहारख्यापनार्थं आदौ कालि- गगहणं कृतमित्यर्थः, किंच-सण्णिअसण्णीणं समनस्काऽमनस्का इति क्रमः दर्शितो भवति, अविकलेंद्रिया अमनस्का इति, अल्पमनोद्रव्यउहन- सामर्थ्ये इति, विद्यते पुनः मनस्तेषां, यस्मादुक्तं ‘क्रमिकीदप तंगाद्याः, समनस्का जंगमाश्रितमेदाः । अमनस्काः पंचविधाः पृथिवीकायादयो जीवा ॥१॥ इति, भणितं सण्णिअसण्णिणसुत्तं ॥ इयाणि सम्ममिच्छासुत्तं, तत्थ सम्मसुत्तं ‘से किं तं सम्मसुत्ते’ त्यादि (४१-१९२) जं इति संक्षेपसंक्षि- श्रुतं ॥ ३७ ॥

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [३८-४३] / गाथा [८१]
प्रत सूत्रांक [३८-४३] गाथा [८१] दीप अनुक्रम [१२९-१३६]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ३८ ॥ अणिदिद्वस्स गहणं, इमं पि पक्खकस्सभावे, वंदणा णमंसणा पूयणादि अरहंतीति अरहंता, अरिणो वा हंता अरिहंता, तेसिं गुणसंपदाए विसेसणं, भगवंतेहिं धम्मजसअत्थलच्छीपयत्तविभव एते छप्पयत्था भगसण्णा जेसिं अत्थि ते भगवंतो, केवलणाणदंसणा उप्पज्जंति, ते य जुगवं समुप्पणे सव्वमणागतद्धा पडुप्पणसरूवा गिरावरणा सव्वगुणपज्जवविसेससामणविसेसभावे जुगवं पवत्ते णाणदंसणधरा, तेहिं णाणदंसणेहिं तीयद्धाए सव्वदव्वगुणभावे जाणति, तथा पडुप्पण्णे अणागते य जाणति, कालतो दव्वभावे य पडुप्पणकाले जाणतीत्यर्थः, हिशब्दो सर्ववचनेषु कारणार्थो बहुवचनप्रतिपादकः, ‘तेल्लोक्कं’ ति तिणिण लोगा तेल्लोक्कं ते य उद्धाडधस्तिर्यक्, अत्र तमिवासिगहणं, भवनवासिनो अधोलोकाणिवासी वणयरजोसितिरितंचमणुस्सा तिरियलोकनिवासी ऊध्वं सर्ववैमानिका एवं प्रायोवृत्त्या अधोलोकायग्गामसंभवाद्वा, वंहितंति कहितं प्रेक्षितं निरीक्षितं दृष्टमित्यन धान्तरं, त्रैलोक्येन महिता मनोरथदृष्टिदृष्टा अथवा गोशीर्षवन्दनादिचर्चिता, त्रैलोक्यस्य मनोहिता महिता, अथवा महिमाकरणेन महिया, सा च महिमा महाजनसमूहेन गीतवृत्त्यनाटकाद्यनेकप्रेक्षणकरणविधाने अणलियमणवज्जसम्भूतत्थविसावयावयणेहिं धुत्ती पूइया, अथवा अन्यान्यविषयप्रसिद्धा ह्येते एकार्थवचनाः प्रतीतं, विसत्थ तिसद्वपवादिसते अभूतत्थरूवे वज्जेऊण इमं जहत्थं दुवाळसंगं पणीतं जं पज्जवणयदव्वियातो भूतत्थेण वा जुत्तं, प्रकरिसेण पीयं प्रणीयं, दुवालसंगं इत्यादि कंठ्यं, इहमंगगतं आयारादि अणंगगतं आवस्सगादि, एवं सव्वं दव्वद्वित्तणयमतेण सामिणा असंबद्धं पंचत्थिकाया इव णिक्वं सम्मसुतं भण्णति, अथवा एतं चेव दुवाळसंगादि संबद्धं भणियं सम्मसुतं, कहं तं चेव सम्मसुतं मिच्छसुतं वा, उच्यते, सम्मदिद्विस्स सम्मसुतं मिच्छादिद्विस्स मिच्छसुतं, इमं चेव सुतपरिमाणतो नियमिज्जइ, जं चोदस्सपुब्बी तस्स सामा इयादि बिंदुसारपज्जवसाणं सव्वं पि णिबमा सम्मं सुतं, ततो उम्मत्थगपरिहाणीए जाव अभिण्णदसपुब्बी पताणवि सामादियादि सव्वं सम्मसुतं सम्मसुत्तत्तणतो चेव भवति, मिच्छणुभावत्तणतो अभिण्णदसपुब्बे ण पावइ, दिहुंतो जधा अभव्वा भावाणुभाव- सम्य- ग्मिथ्या- श्रुते ॥ ३८ ॥

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [३८-४३] / गाथा ८१ 	
प्रत सूत्रांक [३८-४३] गाथा ८१ दीप अनुक्रम [१२९- १३६]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ३९ ॥ क्षणतो ण सिक्खंतीत्यर्थः तेण परंति अभिन्नदसपुञ्जेहिंते हेट्ठा ओमत्थगपरिहाणीए जाव सामाइयं ताव सव्वे सुयठाणा सामिसम्मगुणत्तणतो सम्मसुतं भवति, ते चेव सुतट्ठाणा सामिमिच्छत्तगुणत्तणतो मिच्छसुतं भवति ॥ इदंणि मिच्छसुतं-‘से किं तं मिच्छसुतं’ इत्यादि (४२-१८४) अण्णणितेहिं अण्णणं-अबोधो तेण इतो अणुगतेत्यर्थः, मिच्छादिट्ठि-तेहिं मिच्छंति अनृतं दिट्ठित्ति दरिसणं मिच्छादिट्ठिणो अणुगतेहिंति भणितं, स इत्यात्मनिर्देशः, छंदोऽभिप्रायः, तथा आतत्त्वेण वा अत्यस्स जो बोधो स बुद्धिः, अवमहमीत उत्तरत्र ईहादिविकल्पा, सव्वे मती, अहवा णाणावरणस्योवसमभावो बुद्धी, सो चेव जतो मणोदब्बणुसारतो पवत्ताइ ततो मती मण्णइ, एवं आत्माभिप्रायः बुद्धिः मतिस्ति पत्थुतं, विविधकल्पनाविकल्पितं रचितं, तच्च भारधादि जाव चत्तारि य वेदा संगोषंगा, सव्वे ते लोगसिद्धा, लोगतो चेव तेसिं सरूवं आणितव्वं, एतेसिं सव्वं मिच्छसुतं भणितव्वं, एतंसि सम्ममिच्छसुतविकल्पे चतुरो विकल्पा भाणियव्वा इमेण विधिणा-सम्मसुतं चेव सम्मसुतं, मिच्छादिट्ठिणो चेव मिच्छसुतं, मिच्छसुतं सम्मदिट्ठिणो सम्मसुतं, सम्मसुतं मिच्छादिट्ठिणो मिच्छसुतं चेव, इच्छेताइ तं सम्मदिट्ठिस्स सम्मत्तपरिगहिताइ सम्मसुतं, एत्थ सुते पढमतइयविकल्पा, इच्छेताइति सम्ममिच्छसुताइ, अथवा मिच्छसुताइ चेव, सेसं कंठयं । मिच्छादिट्ठिस्सेच्चादिसुते बिइयच्चउत्थादिविकल्पा दट्ठुवा, तत्थ पढमविकल्पे सम्मसुतं सम्मत्तगुणेण सम्मं परिणामयतो सम्मसुतं चेव भवति, वितियविकल्पे जहा खंढसंजुयं खीरं पित्तजरोदयतो ण सम्मं भवति तथा मिच्छसुदयतो सम्मसुतो मिच्छा-ऽभिणिवेसतो मिच्छसुतं भवति, वितियविकल्पे तिप्फलादिमाणिट्ठंमि उवउत्तं उवकारिककारत्तणतो सम्मं भवति, तथा मिच्छाभावोबलंभातो सम्मसुते दट्ठतरभावुप्पायकरणतो तं से सम्मसुतं भवति, चरिमविकल्पे मिच्छसुतं तं चेव मिच्छाभिणिवेसेन मिच्छसुतं चेव भवति, तस्स वा मिच्छादिट्ठिणो तं चेव मिच्छसुतं सम्मसुतं भवति, कम्हा एवं भणइ ?, उच्यते, परिणामविसेसतो, जम्हा ते मिच्छादिट्ठिणो तेहिं चेव सम्ब- मिच्छा- श्रुते ॥ ३९ ॥	

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [३८-४३] / गाथा [८१]
प्रत सूत्रांक [३८-४३] गाथा [८१] दीप अनुक्रम [१२९-१३६]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ४० ॥ पुष्पाक्षरविरुद्धेहि मिच्छसुतभणितेहि चोदिया भणिया समाणा इति संतः, चोदणाऽणंतरं आत्मकलावस्थायाः संत इत्यर्थः, पुष्पं जं सासणं पडिवण्णो तं से सपक्खे तंमि जातदिट्ठं तं वसेति परिचयंति छद्दंतिचित्तुत्तं भवति, जम्हा एवं तम्हा तं पुष्पमिच्छसुतं सम्मसुतं से भवति । पर आह-तत्तावगमसम्भावसमाणसम्मत्तसुताणं को पदिविसेसो जेण भण्णति सम्मत्तसुतपरिग्गहिताहं सम्मसुतं, उच्यते, जहा णाण-दंसणाणं अवबोधसामण्णभेदा तथा सम्मसुताणपि भविस्सति, कथं ?, उच्यते, जहा विसेसाणं अवबोधिअवातकरणे णाणं अवग्गेह्वाओ चेव दंसणं तहा इमं, तत्ते वा जा रूती तं सम्मत्तं, तत्थेव जं रुचिकं तं सुतं, एवं मिच्छत्तपरिग्गहेऽवि वत्तव्वं ॥ इदाणि सादिसपज्जवसाणो-‘से किं तं सादीयं’ (४१-१९५) इत्यादि, इह पज्जायठितो बोधित्तिणिगतो तस्स भतेणं दुवालसंसंमपि सादिपज्जवसाणंति कंठ्यं, जहा णरगादिभवमवेकखतो जीवो, दव्वठितो पुण अवोच्छित्तिणतो तं तस्स मयेणं दुवालसंसंगपि अणादिअपज्जवसाणं च, त्रिकालावस्थायां जहा पंच-त्थिकायव्व, एमेवऽत्था दव्वादिचउक्कं पडुच्च चित्तिज्ज, तत्थ दव्वतो सम्मसुतं एतंमि पुरिसे सादि, जं पढमताए पढइ, सपज्जवसाणं देवलोमगमणतो गेलण्णतो वा णट्ठो पमादेणं वा केवलणाणुप्पत्तितो वा मिच्छादंसणगमणतो वा सपज्जवसाणं, अहवा एगपुरिसस्सेया सादिपज्जवसाणत्तणतो, दव्वतो चेव बहवे पुरिसे पडुच्च अणादिअपज्जवसाणं, अण्णोण्णठितिमणाइविच्छेयत्तणतो मणुयत्तणं व जहा खेत्ततो भरहेरवत्तेसु तित्थगरधम्मे संघादियाणं उप्पायवोच्छेयत्तणतो सादिपज्जवसाणं, महाविदेहेसु अविच्छेदत्तणतो, कालतो ओसप्पिणिए तिसु वस-प्पिणिए दोसु सो जं तं णोओसप्पिणिणोउस्सप्पिणि तइवं महाविदेहकालपलिभागं पडुच्च तिसुवि कालेसु अवट्टितत्तणतो अणादिअपज्जवसाणं । इदाणि भावतः, जे इति अणिषिट्ठस्स णिदेसे जहा इति काले पुच्छण्हे अपरण्हे वा दिया वा रायो वा पुट्ठिं निणेहि पण्णत्ता भावा पच्छा एए गोतमादिभिः आचवियज्जंति-आरुयान्ते सामण्णतो वा पण्णीवज्जंति भेदप्रभेदेहि तोसिं भेदप्पमेदाणि सरूवमक्ख्खाणं परूवणा, वंसिज्जंति उवसा साद्यादि श्रुतं ॥ ४० ॥

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [३८-४३] / गाथा [८१]
प्रत सूत्रांक [३८-४३] गाथा [८१] दीप अनुक्रम [१२९-१३६]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ४१ ॥ मेसेणं, जहा गो तथा गवय इति, गिदंसणं हेउदिट्ठतेहि, उवदंसणा उवणतोवसंधारेहिं, सव्वणयेहिं वा, अथवा एगट्ठिता, एते इति पण्णव- णिज्जाण गिहेसो, तथा इति पण्णवगं पण्णवणिज्जे वा पडुच्च सादि सपज्जवसाणं भवति, तच्च पण्णवगं पडुच्च उवयोगतो सरिसेसतो पयत्तयं आसणीवसेसतो य सादिपज्जवसाणं, पण्णवणिज्जे पडुच्च गतितो ठाणतो दुपदेसादिभेदतो तथेगपदेसादिमगवगाढतो एगसम- यादिअव्वत्थाणातो वण्णाइपज्जवे य आसज्ज सादिसपज्जवसाणं, पाठान्तरं वा 'ते तदा पडुच्च' तथा इति काळं, अनाद्यपर्यवसितं भावतः भुतज्ञानं क्षायोवशमिके भोवे नित्यं वर्त्तते स्वामित्तसंबंध इति, अहवा सादिपज्जवसाणं सपडिपक्खं पदेसु भंगचउक्को, पढमभंगे संमस- हितसुतभावो चित्तियव्वो, अणेगविधं वा खयोवसमभावं पडुच्च दव्वदिउवयोगं वा पडुच्च पढमभंगो, विइयो सुण्णो, अहवा अभव्वाणं अणागतद्वसंधेण सुतभावो भणितव्वो, चरिमतइयभंगेसु अविसिट्ठसुतभावो अभव्वभव्वे पडुच्च जोएयव्वो, अभव्वसिद्धियस्स इच्चादि सुतसिद्धं, इह चरिमततियभंगेसु अणादिसुतभावो दिट्ठो सुताधिकारतो, इहरा सातिभावो दट्ठव्वो, मतिसुताण अण्णुण्णाणुगतत्तणते, सो य अणादिभावो जहण्णो अजहण्णमणुक्कोसो वा हवेज्जा, उक्कोसो ण भवति, कम्हा ?, जम्हा उक्कोसणाणभावो केवलिणो भवति, तस्स य सुते इमं पमाणं पढिज्जइ— ‘सव्वागासपदेस’ इत्यादि सूत्रं, सव्वमिति अपरिसेसं, सव्वगं अवि किधेवं भवति?, सव्वं आकासं, सव्वागासयस्स पदेसा सव्वागास- पदेसा जं परिमाणंति वुत्तं भवति, एवं सव्वागासपदेसियगं अणेतें रासिणा अण्णेण गुणितं, ताहे जं रासिपमाणं लब्धमिति तं सव्वपज्ज- वाण अगं भवति, पज्जाताण त एकेक्कसागासपदेसस्स जावंतो अगुरुलहुयादी पज्जवा एए पण्णाए सव्वे संपिडिता, तेसिं संपिडियाणं जं अगं एतप्पमाणं अक्खरं लभति, अक्खरंति दुविहं णाणं, अकारादि दव्वसुतक्खरं, तत्थ णाणमक्खरंति अविसेसतो सव्वं णाणमक्खरं, साद्यादि- भुतं ॥ ४१ ॥

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [३८-४३] / गाथा ॥८१॥
प्रत सूत्रांक [३८-४३] गाथा ॥८१॥ दीप अनुक्रम [१२९- १३६]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ४२ ॥ जम्हा तं जीवातो उपपन्नं अण्णभावात्तणतो णो खरइत्ति, इह पुण सव्वपज्जायतुल्लत्तणतो केवलणार्णं चेतव्वं, तम्हा केवलं सव्वदव्वपज्जाय- विण्णत्तिसमत्थं भवति, तथा केवलं णेये पवत्तइत्ति तस्सवि परिमाणं इमेण चेव विहिणा भाणियव्वं, सव्वागासपदेसग्गं इत्यादि पूर्ववत्, ते य सव्वपज्जाया समासतो तीसं इमेण चेव विहिणा-गुरु २ लहु २ एते चउरो पंच वण्णा दो गंधा पंच रसा अट्ट फासा अणित्थत्थसंठाणसंठिता छ संठाणा, एते सव्वदव्वे संभवन्ति, अमुत्तदव्वेसु अगुरुलहु चेव एक्को पज्जायो संभवति, एत्थ य एक्केके भेदे अणंता भेदा संभवन्ति, किंच- मुत्तदव्वेसु णयविसेसतो अणेगवरा अट्टवीसं थूलपज्जाया भवन्ति, कथं ?, उच्यते, ते च वत्तीसं सव्वगुरुलहुपज्जाएहिं विहूणा, यतो भणितं ‘णिच्छययो सव्वगुरु सव्वलहुं वा ण विज्जते दव्वं। ववहारतो उ जुज्जति वायरखंधेसु णण्णेसु ॥ १ ॥ णिच्छयमतेण सव्वहा लहुं गुरुं वा णत्थि दव्वं, जदि हवेज्ज तो तस्स पडमाणस्स ण विरोहो केणइ हवेज्जा, सव्वलहुस्स वा उपपदमाणस्स, जओ य निक्कपडणं उपपडणं वा ण विज्जते, सव्वहा लहुं गुरुं वा ण, तम्हा सव्वहा गुरुं लहुं वा दव्वं णत्थि, ववहारणतादेसेण पुण दोऽवि अत्थि, जहा सव्वगुरु कोडिसिला वज्जं वा, सव्वलहुं व धूमउल्लापत्तादी, एवं ववहारणतादेसतो वायरपरिणामपरिणतेसु खंधेसु गुरुभावो लहुभावो य भवति, णाण्णेसु तिण्णसु- हुमपरिणामेसुत्ति, के पुण सुहुमपरिणामिता दव्वा के वा वायरपरिणया ?, उच्यते, परिणामतो आरद्धं एगुत्तरवड्ढितेसु ठाणेसु सुहुमपरिणता दव्वा लब्धन्ति, एतेसि च अगुरुलहुपज्जवा भवन्ति, वायरो पुण परमाणुतो आरब्भ जाव असंखेज्जपदेसिओ खंधो भवति परतो वायरपरिणामो खंधो लब्धन्ति, सो य जहण्णोवि अणंतपदेसिओ णियमा भवति, तातो एगुत्तरवड्ढिता अणंतठाणावादिवा वायरा खंधा ते ओरालविउव्वा- हारतो य वग्गणासु भवन्ति, णियमा य ते गुरुलहुपज्जया भवन्ति, सीसो पुच्छति-जे रुविगुरुलहुदव्वा अगुरुलहुया तेसि के थोवा लहुया ?, उच्यते, थोवाणि लहुदव्वाणि, तेहिंतो रूवी अगुरुलहु दव्वा अणंतगुणा भवन्ति, उच्यते थूराणं अणंतपदेसिताणं खंधाणं सट्ठाणे अणंताओ केवल- पर्यायमानं ॥ ४२ ॥

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [३८-४३] / गाथा ॥८१॥
प्रत सूत्रांक [३८-४३] गाथा ॥८१॥ दीप अनुक्रम [१२९- १३६]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ४३ ॥ वग्गणाओ, सुहुमाणं पि अणंताओ वग्गणातो, थूरवग्गणट्ठाणेहिं तो उवरिं भासादि वग्गणठणे सु एक्के अणंताओ वग्गणातो, हेट्ठातो वि थूर- वग्गणट्ठाणेणं एक्का वग्गणा, एवं जाव दसपदेसिताणं संखेज्जपदेसिताणं संखेज्जाओ वग्गणाओ असंखेज्जपदेसिताणं असंखेज्जाओ वग्ग- णातो, एतेणं कारणेणं गुरुलहुदव्वेहिं तो रूवी अगुरुलहुदव्वणि अणंतगुणाणि भवंति, आदेसंतरेण वा बादरठणे सुवि सुहुमपरिणामो अविरुद्धेति भाणियव्वो, उक्तं च ‘गुरुलहुदव्वेहिं तो अगुरुलहुपज्जाया अणंतगुणा । ओमयपडिसेहिया पुण अणंतकप्पा बहुविकप्पा ॥ १ ॥ गुरुलहुपज्जायजुता जे दव्वा तेसिं चेव पज्जाया । तेहिं तो रूविअगुरुलहुय दव्वाण जे अगुरुलहुपज्जाया ॥ २ ॥ ते अ थोरअणंत- गुणत्तणतो अणंतगुणा एव भवंतीत्यर्थः, उभयपडिसेहिया नाम अगुरुयलहुआ, पुण विसेसणे, किं विसेसति ?, उच्यते, अरूविदव्वाधारा इत्यर्थः, अहवा उभयपडिसेहिता नाम बायरसुहुमभाववज्जिता जे दव्वा, अरूविण इत्यर्थः, तेसु अणंतकप्पा नाम एक्के अणंतप्रकारा, कथं?, उच्यते, आगासत्थिकाए देसपएसपरिकप्पणाए, एवं धम्मादिमुवि, बहुविकप्पत्ति तेसिं अणंतकप्पाणं एक्के अणंतप्रकारो, कथं पुण?, उच्यते, जम्हा एक्के आगासपदेसे अणंता अगुरुयलहुयपज्जाया भवंति तम्हा ते बहुविकप्पत्ति, ते य सव्वण्णुवयणयो सद्धेया इति, रूविअरूविदव्वाण य पज्जायअप्पबहुयं इमं भणति-रूविदव्वाणं जे गुरुलहुपज्जाया ते पण्णाछेदेण पिंडिता एतेहिं तो एकस्स चेव अमुत्त- दव्वस्स जे अगुरुलहुपज्जाया ते अणंतगुणा भवंतीत्यर्थः, एत्थं सीलो भणति-केवतिएहिं पुण भागेहिं मुत्तदव्वाणं पिंडियपज्जाएहिं तो अमुत्तदव्वाणं अगुरुलहुपज्जाया अणंतगुणा भवंति?, उच्यते, नास्त्यत्र परिमाणं, बहुधावि अणंतएणं गुणिज्जमाणो अमुत्तदव्वपज्जाएसु नात्थि परिमाणं, एवं गते परिमाणार्थे इमं भणति—‘केण ठवेज्ज निरोहो अगुरुलहुपज्जायाण उस्सुत्ते । अस्संतमसंजोगो जहितं पुण नं विवक्खस्स ॥ १ ॥’ जतो अमुत्तदव्वाणं बहुधावि अणंतएणं गुणिज्जमाणा पज्जाया ण भवंति ततो केनेति-केनान्येन प्रकारेण भविष्यति?, भवे निरोहो अगुरुलघु- पर्यायाः ॥ ४३ ॥

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [३८-४३] / गाथा [८१]
प्रत सूत्रांक [३८-४३] गाथा [८१] दीप अनुक्रम [१२९-१३६]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ४४ ॥ नाम परिमाणपरिच्छेद इत्यर्थः, किं मुत्तद्व्याणं अगुरुलहुपञ्जायपरिमाणं भविस्सति?, नित्युच्यते--‘अच्वंतमसंजोगो’ अच्वंतं-अतीव अपुञ्ज-माणो जम्हा संजोगो जहितंति-यत्र, पुण विसेसणे, किं विसेसइ?-रुविदब्बे, तादेत्यनेन अमुत्तद्ववपक्खो तस्स विवक्खो मुत्तद्ववपगारो तेसु पञ्जायथोवत्तणतो अमुत्तद्ववेसु पञ्जायाण अतीव बहुयत्तणतो, अतो मुत्तद्वेहिं तो अमुत्तद्ववपञ्जायाण परिमाणकरणसंजोगो एगंते णेव युज्जते, ण षडतेत्यर्थः, ‘एवं तु अणेतहिं अगुरुलहुपञ्जएहिं संजुत्तं। होति अमुत्तं दव्वं अरुविकायाण उण चउण्हं।१॥ति, चउण्हं-धम्माधम्मा-गासजीवाणंति, एतेसिं चउण्हविं णियमा पत्तेयं अणता अगुरुलहुपञ्जाया भवंति, कथं?, उच्यते, जहा एतेसिं एक्केको पदेसो अणेतहिं अगुरुलहुपञ्जाएहिं संजुत्तो तम्हा धम्माधम्मेगजीवस्स य असंखेज्जपदेसत्तणतो असंखेज्जमणता पत्तेयं भवंति, आगासपदेसपरिमाणत्तणतो पुण तोसिं अत्थि परिमाणं तहावि संववहारतो अणता उक्ता इत्यर्थः, एवं ताव वक्खेयमनंतमुत्तं ॥ अथेदानीं तत्केवलज्ञानं यथाऽनंतं तथेदमुच्यते ‘उवलद्वो’ गाहा, सव्वे रुविदव्वेण य जावइयां गुरुलहुपञ्जाया ते सव्वे अरुविदव्वेण य जे अगुरुलहुपञ्जाया एते सव्वे जुगवं जाणति पासइ य, जतो एवमणंतं केवलणाणमक्खान्तंति सप्रसंगमभिहितं। इदाणि अक्खकारादिदव्वसुतमक्खरंति, जदि अविसेसतो णाणमक्खरं सुतं णेयव्वं तहावि रुदिवसतो जहा पंकयं तहा सरक्खरं वंजणक्खरं वण्णक्खरं वा भण्णति, तत्थ सरक्खरं सरंति-गच्छंति सरंति वा इत्यतो सरक्खरं, अकारादि, वंजणस्स वा फुडमभिधाणं खरति, ण वा सरक्खरमंतरेण अत्थो संभरेज्जति सरक्खरं, ककारादि वंजणक्खरा, व्यज्जतेऽनेनार्थ इति प्रदीपेन घटादिवत् व्यज्जनाक्षरं, तोहिं चेव सरवंजणक्खरं, वण्णक्खरं किं?, जदा अत्थो वण्णिज्जति अभिलप्पते वा तदा ते वण्णक्खरं भण्णति, इह एक्केक्कस्स अकारादिहकारान्त सरक्खरसपरपञ्जाया भेदा इमे, अकारस्स पञ्जाया जधा-दीहहस्वप्लुतास्सयः, तथा बीहो उदात्ता-नुदात्तस्वरितभेदः, एवं हस्वप्लुतावपि, पुनरप्येक्के साऽनुनासिको निरनुनासिकश्च, इत्येवं अष्टादशभेदः, एवं सेसक्खराणवि जहासंभवं भेदा पर्यायाः अक्षर- भेदाश्च ॥ ४४ ॥

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [३८-४३] / गाथा [८१]
प्रत सूत्रांक [३८-४३] गाथा [८१] दीप अनुक्रम [१२९-१३६]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ४५ ॥ भाणियन्वा, अहवा सरविससतो एकेकमक्खरस्स अणंता पज्जाया, एत्थ य अकारजाती सामण्णतो सपज्जया अट्टारस्स, सेसा परपज्जाया, अथवा अकारादि वंजणा केवला अण्णसहिता वा जं अभिलावे लभते ते तस्स सपज्जाता, सेसा तस्स परपज्जाया, ते य सव्वेवि अणंता, जतो सुते भणितं ‘अणंता गमा अणंता पज्जाया’ भणितं ‘पण्णवणिज्जा’ गाथा, ‘अक्खरलंभेण’ गाथा, अणभिलप्पाण अभिलप्पा अणंतभागो, तेसिपि अणंतभागो सुतण्णिवद्धो इति, अहवा अकारादिअक्खराण पज्जया सव्वद्वपज्जायरासिप्पमाणमेत्ता भवन्ति, कइं ?, उच्यते, जे अभिलावतो संजुत्तासंजुत्तोहिं अक्खरेहिं उदत्ताणुदात्तेहि य सरेहिं जावइए अभिलोव अभिलप्पे य लभति ते सव्वे सतमप्पपज्जा-इया, सेसा सव्वे परपज्जाया, आकासं मोत्तु सयपज्जएहिंतो परपज्जाया अनंतगुणा, आगासस्स सपज्जएहिंतो परपज्जाया य, णणु विइद्धं, उच्यते, सव्वक्खराण घटादिवत्थुणो वा दुहया पज्जया चित्तिज्जंति, संबद्धा असंबद्धा य, अकारस्स अकारपज्जया अकारसहावत्तणतो अत्थि-त्तेण संबद्धा, घटागारावस्थायां घटपर्यायवत् , ते चेव णत्थित्तेण असंबद्धा, णत्थित्तस्स अभावत्तणओ, जहा घटाकारावस्थायां मृत्पर्यायवत्, अकारे इकारादिपर्याया णत्थि, ते असंबद्धा, अकारेण छिन्नभावत्तणतो, जहा मृदवस्थायां पिंडाकारपर्यायवत्, ते चेव णत्थित्तेण संबद्धा, अत्थित्तभावत्तणतो घटाद्यवस्थायां घटपर्यायवत्, एवं अक्खरेण छिन्नभावत्तणतो परेसु घडेसु घड इव पज्जाया विचित्तिणिज्जा, घटादिसु य अकारपज्जाया, इच्चेवं एकेकमक्खरं सव्वपज्जायमयं, एवं सर्वत्रकाः सर्वपर्यायाः, अतो भण्णति सव्वागासपदेसेणं अणंतगुणितं पज्जवगं अक्खरं णिप्फज्जइ, एवं णाणक्खरं अकारादिअक्खरं णेयअक्खरं च तिण्णिवि अणंतभिहिता, एत्थ णाणक्खरं जीवस्स संसारत्थस्स ण कयाइ ण भवति, जतो भणितं ‘सव्वजीवाणं पि य णं’ इत्यादि सुत्तं, सव्वजीवगहणेऽवि सति अविपदं संभावणे, किं संभावयइ ?, इमं- साधादि- श्रुतं ॥ ४५ ॥

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [४४] / गाथा ॥८१...॥
प्रत सूत्रांक [४४] गाथा ॥८१...॥ दीप अनुक्रम [१३७]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ४७ ॥ विसेसजुत्तं सुतं दुगादिसतगसो पढिज्जमाणं गमितं भण्णति, तं च एवंविहं उरसणं दिट्ठिवाए, अण्णोणसगभिधानठितं जं पढिज्जइ तं अगमितं, तं च प्रायसो आयागिदकालियसुतं, उक्तं गमितागमितं ॥ इदार्णि अंगणंगपविट्ठं- (४५-२०९) तं च गमितागमितं चेव समासतो अंगणंगपविट्ठं भण्णति, कहं ?, उच्यते, सव्वसुतस्स तदभा- वगतत्तणतो, अहवा अरहंतेमगोवदिट्ठाणुसारे ठितं जं तं समासतो दुविहं इत्यादि सुतं, पादयुगं जंघोरुगातदुवगं च दो य बाहू ता । गी- वा सिरं च पुरिसो बारसअंगो सुताविसिट्ठो ॥१॥ इच्चेतस्स सुतपुरिसस्स जं सुतं अंगभागठितं तं अंगपविट्ठं भण्णइ, जं पुण एतस्सेव सुतपुरि- सस्स बहरेगे ठितं तं अंगबाहिरंतिभण्णति, अहवा गणधरकयमंगगतं जं कत थेरहिं बाहिरं तं च णियतं अंगपविट्ठं अणिययसुत- बाहिरं भाणितं । ॥ १ ॥ से किं तं अंगबाहिरं इत्यादि, कंठ्यं । आवस्सगवइरित्तं दुविहं—कालियं उक्कालियं च, तत्थ कालियं जं दिणरादीणं पढमे (चरमे) पोरिसीसु पढिज्जइ, जं पुण कालवेलवज्जे पढिज्जइ तं उक्कालियं, तत्थ उक्कालियं अणेगविधं--दसवेयालियादि, कप्पमकप्पं च जत्थ सुते वण्णिज्जइत्ति कप्पियाकप्पियं, कप्पं जं सुते वण्णितं तं कप्पसुतं, अणेगविहचरणकप्पणोक्कप्पयं तं कप्पसुतं, तं दुविहं चुल्लं म- हंतं वा, चुल्लंति लद्धतरं अवित्थरत्थं अप्पगंथं वा चुल्लकप्पसुतं, महत्थं महान्थं वा महाकप्पसुतं, एसेव पण्णवणत्थो सवित्थरो, अण्णे य स- वित्थरत्था जत्थ भाणिता सा महापण्णवणा गेज्जा, मज्जादितो पंचविधो पमातो तेसु चेव आभोगपुट्ठिवया उवरती अप्पमातो, एते जत्थ सुवित्थरा दंसेज्जइ तमउक्कयणं पमातप्पमादं, सूरचरितं एत्थ विद्यते जत्थ सा सूरपण्णत्ती, पुरिसोत्ति संकू पुरिससरीरं वा, ततो पुरिसतो णिप्फण्णा पोरि- सी, एवं सव्वस्स वत्थुणो यदा स्वप्पमाणा छाया भवति पोरिसी हवइ, एत्थं पोरिसिप्पमाणं उत्तराययणस्स अन्ते दक्खिणायणस्स वा आदी एक्क- दिणं भवति, अतो परं अट्ठएक्कसट्ठिमागा अंगुलस्स दक्खिणाययणे वद्धेति उत्तराययणे व हस्संति, एवं मंडले मंडले अण्णभ्णा पोरिसी जत्थ अज्झयणे गमिकाग- मिकं अंगप्रवि- ष्टादि ॥ ४७ ॥
	अथ अंग-अनंग प्रविष्ट सूत्राणां वर्णनं आरभ्यते

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [४४] / गाथा ॥८१...॥
	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ४८ ॥ दंसेज्जइ तमज्झयणं पोरिसिमंडलं, चन्दसूरस्स दाहिणुत्तरेसु मंडलेसु जहा मंडलाड मंडलपवेसो तथा वणिज्जइ जत्थ अज्झयणे तमज्झयणं मंडलप- वेसो, विज्जत्ति—णाणं, चरणं— चारित्तं, विविधो विसिट्ठो वा निच्छतो—सम्भावो स्वरूपमित्यर्थः फलं वा निच्छतो तं जत्थज्झयणे वणिज्जइ तमज्झयणं विज्जाचरणविणिच्छतो, सबालवुड्ढाडलो गच्छो गणो सो जस्स अत्थि सो गणी, विज्जात्ति णाणं, तं च जोइसाणिमित्तगतं णाडं पसत्थे- सु इमे कज्जे करेति, तंजहा—पव्वावणा सामाइयारोवणं उवड्ढावणा सुतउद्देससमुद्देसाणुण्णातो गणीये वा णंदिस्साणुण्णा, खेत्तेसु य णिग्गमपवे- सो, एमादिया कज्जा जेसु तिहिकरणनक्खत्तमुहुत्तजोगेसु य जे जत्थ करणेज्जा ते जत्थज्झयणे वणिज्जन्ति तमज्झयणं गणिविज्जा, थिरमज्झवसाणं झाणं, विभयणं विभत्ति, समेदज्झाणं जत्थ वणिज्जइ अज्झयणे तमज्झयणं ज्झाणविभत्ती, मरणं-पाणच्चातो विभयणं विभत्ती पसत्थमपसत्था- णि समेदाणि मरणाणि जत्थ वणिज्जन्ति अज्झयणे तमज्झयणं मरणविभत्ती, आतत्ति आत्मा तस्स विसोधि तवेण चरणगुणेहि य आलोयणा- विहाणेण य जहा भवति तहा जत्थ अज्झयणे वणिज्जइ तमज्झयणं आतविसोधी, सरागो वीयरगो य एतेसिं जत्थ सरूवकइणा विसेसतो वीयर- गस्स तमज्झयणं वीयरायसुतं, वाधातो णिव्वाधातो वा भत्तसंलेहो कसायादिभावसंलेहो य जो जधा कायव्वो तथा वणिज्जती जत्थ अज्झयणे तम- ज्झयणं संलेहणासुतं, विधरणं विधारो तस्स कप्पो विधित्तं वुत्तं भवति सो जिणकप्पे थेरकप्पे वा, जिणकप्पे पडिमं अहालंदं परिहारिया य दट्ठव्वा, एतेसिं वित्थरा विधि जत्थ अज्झयणे तमज्झयणं विधारकप्पो, चरणं—चारित्तं तस्स विधी चरणविधी, समेदो चरणविधी सज्जइ जत्थ अज्झय- णे तमज्झयणं चरणविधी, आतुरो-गिलाणो तं किरियातीतं णातुं गीतत्था पच्चक्खावेंति दिणेर् दव्वहासं करेता अंते य सव्वहा तेण ता भत्ते वे- रगं जणेंता भत्ते णित्तण्हस्स भवचरिमपच्चक्खाणं करेति, एयं जत्थ अज्झयणे सवित्थरं वणिज्जइ तमज्झयणं आउरपच्चक्खाणं, थेरकप्पेण वा विहरेत्ता अंते थिरकप्पिता पुण वित्थरेण संल्लीडा तहावि जधाजुत्तं संलेहा करेत्ता णिव्वाधातं सव्वधा चेव भवचरिमं पच्चक्खन्ति, एयं सवित्थरं उत्कालिकं ॥ ४८ ॥

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [४४] / गाथा ॥८१...॥
प्रत सूत्रांक [४४] गाथा ॥८१...॥ दीप अनुक्रम [१३७]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णी ॥ ५० ॥ ण उव्वण्णा ता वणिता ताओ य कप्पबद्धेसया भणिता, संजमभावविगसितो पुप्फितो संजमभावचुतो अवपुप्फितो, अगारभावं परिट्ठवित्ता प- व्वज्जाभावेण विगसित्ता पच्छा सीयइ जो तस्स इह भवे परभवे य विलंबणा दंसिज्जइ जत्थ ता पुप्फिया, एस विसेसो पुप्फचूलाए दंसिज्जइ । अंधगवण्हिणो जे कुले ते अंधगसइल्लोवातो वण्हिणो भणिया, ते मंधरियगती सिज्जणा य जत्थ भणिता ते वण्हिदसातो, दसत्ति अवत्था अज्झ- यणा वा, भगवतो उसभस्स चउरासीइसमणसाहस्सीतो होत्था, पइण्णगज्झयणावि सव्वे कालियउल्लालिया चउरासीइसहस्सा, कथं?, जतो ते चउ- रासीइसमणसहस्सा आरिहंतमग्गउवदिट्ठे जं सुतमणुसरेता किंचि णिज्जूहंति ते सव्वे पइण्णगा, अहवा सुतमणुस्सरंतो अप्पणो वयणकोसल्लेण जं धम्मदेसणादिसु भासंतो तं सव्वं पइण्णगं, जम्हा अणंतगमयज्जगं सुत्तं विट्ठं, तं च वयणं णियमा अण्णयरगमाणुपाती भवति, तम्हा तं पइण्णगं, एवं चउरासीइ पइण्णगसहस्सा भवंतीत्यर्थः, एतेणेव विहिणा मज्झिमतित्थगराणं संखेज्जा पइण्णगसहस्सा, समणस्सवि भगवतो जम्हा चोइस- समणसाहस्सीतो उक्कोसिता समणसंपया तम्हा चोइसपइण्णगज्झयणसहस्सा भवंति, अहवा ‘जत्तिया सिस्सा’ इत्यादिसूत्रं, इह सुत्ते अपरिमा- णा पइण्णगा, पइण्णगसामिअपरिमाणत्तणतो, किंच-इह सुत्ते पत्तेयबुद्धपणीयपइण्णगं भणियव्वं, कम्हा?, जम्हा पतिण्णयपरिमाणेण चैव पत्तेय- बुद्धपरिमाणं करेइत्ति भणितं, पत्तेयबुद्धा वेत्तिया चैवत्ति, चोदक आह--णणु पेत्तयबुद्धा सिस्सभावो य विरुज्जए, आचार्याह--तित्थगरपणीय- सासणपडिवण्णत्तणतो, तस्सीसो भवतीत्यर्थः, भणितं कालियसुत्तं, अंगबाहिरं च ॥ इदाणि अंगपविट्ठं— (से किं तं अंगपविट्ठं (४५-२०९) इत्यादि (से किं तं आयारे ४५-२०९) सूत्रं, आयरणं आयारो गोयरो भिक्खागइणविहाणं विण- ओ नाणाइओ विविधो बावण्णविधाणो वा वेणइया-सीसा तेसिं जहा आसेवणसिक्खा भासा सच्चवा असच्चमोसा य एयं सव्वं आयारो अभासा- मोसा सच्चामोसा य, चरणं ‘वयसंजम’ गाथा करणं ‘पिंडस्स जा विसोधी’ गाथा, जत्तत्ति य संजमजत्ता तस्स साहणत्थं आहारो मत्तत्ति- कालिकं ॥ ५० ॥
आचार आदि अंग-सूत्राणां वर्णनं क्रियते	

[illegible]

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [४५-५६] / गाथा [८१....]		
प्रत सूत्रांक [४५-५६] गाथा [८१..] दीप अनुक्रम [१३८- १४९]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ५३ ॥ वियाहिति व्याख्या इह जीवादयो व्याख्यायते, इह सतं चेव अज्झयणसन्नं, गोयमादिर्हि पुट्टे अपुट्टे वा जो पण्हंतवागरणं, सेसं कंथं से तं वियाहि ॥ ‘से किं तं पाताधम्मकहा’ त्यादि सूत्रं (५१-२३०) एगूणवीसं पातज्झयणा, पातात्ति आहरणा, विट्ठंतियो वा गज्जइ ते पाता, एते पढमसुयखंधे, अहिंसाविलक्खणस्स धम्मस्स कहा धम्मकहा, धम्मिआओ वा कहाओ धम्मकहाओ, अक्खाणगात्ति वुत्तं भवति, एते वित्तियसुतखंधे, दस धम्मकहाणं वग्गा, वग्गोत्ति समूहो, तव्विसेसणविसिट्ठा दस अज्झयणा वेते दट्ठवा, एगूणवीसं पाता दस य धम्म- कहाओ, तत्थ पातेसु आदिया दस पाता चेव, पातेसु अक्खाइयादिसंभवो, सेसा णव पाता, तेसु एक्के पाते चत्तालीसं अक्खादियाओ भवति, तत्थवि एक्केकाए अक्खाइयाए पंच पंच उवक्खाइयसयाइं भवति, तेसुवि एक्केकाए उवक्खाइयाए पंच पंच अक्खाइयउवक्खाइयसयाइं भवति, एवं एते णव कोडीओ, ताओ धम्मकहासुं सावेतव्वत्ति काडं एगूणवीसाए णपाताणं दसण्ह य धम्मकथाणं विसेसो कज्जइ, दस पाता दसणव धम्मकथाओ, दसहिं परोप्परा सुद्धा, एवं विसेसे कते सेसा णव पाता, ते पाया चत्तालीसाए गुणिता, जाता तिणि सया सट्ठा अक्खाइताणं, एते अक्खाइया पंचसतेहिं तो सोभिता, तत्थ सेसं चत्ताळं सते, तं उवक्खाइयपंचसतेहिं गुणितं, जाता उवक्खाइयाणं सत्तरि- सहस्सा, ते इहिं अक्खाइतोवक्खाइयसतेहिं गुणिता, एवं जाया अट्ठुट्ठातो अक्खाइयोकोडीओ, पदग्गेणीति उवसग्गपदं निवातपदं णामित- पदं अक्खात्तपदं मिस्सपदं च, एते पदे अधिकिरुच पंच लक्खा छावत्तरि च सहस्सा पदग्गेणं भवति, अथवा सुत्तालावयपदग्गेणं संखेज्जाइं पदसहस्साइं भवति, अहवा छोटतरावि त सहस्स पंचलक्खावि संखेज्जपदसहस्सेहिं ण विरुज्जति, सेसं कंथं, ‘से तं पाताधम्मकहाओ ॥ ‘से किं तं उवासग्गदसाओ’ इत्यादि सुत्तं (५२-२३१) ‘उवासय’ति सावता तेसिं अणुवयगुणसीलवतोवदेसणा दससु अज्झयणेसु अक्खा- तिज्जति उवासग्गदसा भणिता, तासु य पदग्गं एक्कारस लक्खा बावणं च सहस्सा पदग्गेणं, सुत्तालावयपदेहिं संखेज्जाणि वा पदसहस्साइं पद- ज्ञाताद्यंग- प्रविष्टं ॥ ५३ ॥		

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [४५-५६] / गाथा ॥८१...॥	
प्रत सूत्रांक [४५-५६] गाथा ॥८१...॥ दीप अनुक्रम [१३८- १४९]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ५४ ॥ गोणं, सेसं कंठ्यं, ‘से तं उवासगदसाओ’ ॥ ‘से किं तं अंतकडदसाओ’ इत्यादि सुत्रं (५३-२३२) ‘अंतकडदस’सि कम्मणो संसारस्स वा अंतो कडो जेहिं, ते य तित्थगारादी, ते पढमवग्गो दसज्झयणंति तस्संखतो अंतकडदससि, अहवा दससि अवत्था, तेसिं जा अवत्था सा व-णिज्जतिस्ति अतो अंतकडदसा, सरीरा धुज्झणे वा दसणं अंतकगेत्ति अंतकडदसा, णवरं अंतकडकिरियाओत्ति अस्य व्याख्या-अंतकडणं किरिया अंतकडकिरिया, बहूणं ता अंतो कडे किरियाओत्ति भणिता, किरियात्ति क्रिया कडावत्था इत्यर्थः, अहवा किरियात्ति कर्मक्षपणक्रिया ससेलसादिअवत्थाए, अहवा किरियात्ति सुहुमकिरियं ज्ञाणं, अहवा घातिकम्मेसु अंतकडेसु किरियात्ति कम्मबंधो, सो य इरियावहितोत्ति भणितं भवति, आघाविज्जइ, वग्गोत्ति समूहो, सो य अंतकडणं अज्झयणाणं वा, सत्वे अज्झयणा जुगवं उदिसंति, तासु सुत्तपदग्गा तेवीसं लक्खा चडरो य सहस्सा पदग्गेणं, संखेज्जाणि वा पदसहस्साणि सुतालावगा अ पदग्गेणं, सेसं कंठ्यं, से तं अंतकडदसा’ ॥ ‘से किं तं अणु-त्तरोववाइयदसा’ इत्यादि सुत्रं (५४-२३३) णत्थि जस्सुत्तरं सो अणुत्तरो, उववज्जणमुववातो उप्पत्तीत्यर्थः, अणुत्तरो उववाओ जस्स सो अणुत्तरोववाइतो तेसिं, बहुवयणाओ अणुत्तरोववाइयत्ति वग्गे वग्गे दसज्झयणात्ति अतो अणुत्तरोववाइयदसा भणिता, संसारे सुहभावं पडुच्च अणुत्तरं, अहवा गतिचउक्कं पडुच्च अणुत्तरं, अहवा द्वेवगतीए चेव अणुत्तरं, अणुत्तरदेवेसु जेसिं उववाओ तेसिं णगराविया कहिज्जंति, इह वग्गो-त्ति समूहो, सो य अज्झयणाणं, वग्गे वग्गे दस अध्ययणा इत्यर्थः, तेसिं पदसंखा छायालीसं लक्खा अट्ट य सहस्सा, संखेज्जाणि वा पदसह-स्साणि, सेसं कंठ्यं ‘से तं अणुववाइयदसा’ (अणुत्तरोववाइयदसा) ॥ ‘से किं तं पण्हावागर्णाइ’ इत्यादि सुत्रं (५५-२३४) पण्होत्ति पुच्छा, पडिवयणं वागरणं प्रत्युत्तरमित्यर्थः, तम्हि पण्हावागरणे अंगे पंचासवदाराविका व्याख्येया परप्पवादिणो य अंगुट्टाहूपपासिणादियाणं च पसिणाणं अट्टुत्तरं सतं, किंच-जे विज्जमंता विवाए जविज्जमाणा अपुच्छिता चेव सुभासुभं कहयंति तारिसाणं अपासिणाणं अट्टुत्तरं सयं उपासका- यंगानि ॥ ५४ ॥	

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [४५-५६] / गाथा [८१].....
प्रत सूत्रांक [४५-५६] गाथा [८१].. दीप अनुक्रम [१३८- १४९]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ५५ ॥ अंगुष्ठादपसिणभावं चेव करेति तं तारिमाणं पसिणापसिणवज्जाणं अटुत्तरं सयं, अहवा अणंतरा जे कहिता ते पसिणा परंपरे पसिणापसिणा तं पुण विज्जाकहितस्स परंपरे भवति, अण्णे य विविधातिसया कहेज्जंति, किं वा णागा सुवण्णा अण्णे य भवणवासिणो ते विज्जमंतागरिसिता आगता साधुणा सह संबदंति-जरुपं करेति, पाठान्तरं वा दिव्वा संघाया संबयंति त दुमुक्खा संभवति, वरदाधावगतादि वा कुर्वति, दसमस्संगस्स पदग्गं दोणडतिलक्खा सोलस य सहस्सा, पदग्गेणं संखेज्जाणि वा पदसहस्साणि, सेसं कंठ्यं, ‘से तं पण्हावागरणं ॥ ‘से किं तं विवागमुत्तं’ इत्यादि (५६-२३४) विविधो पाकः विपचनं विपाकः कर्मणां सुभमसुभो जंमि वा सुत्ते विपाको कहिज्जइ तं विपाकसुत्तं, विपाकसुत्तस्स सुत्तपदग्गं एगा पदकोडी चुलसीती च लक्खा बत्तीसं च सहस्सा पदग्गेणं, संखेज्जाणि वा पदसहस्साइ पदग्गेणं, सेसं कंठ्यं, ‘से किं तं दिट्ठिवाति’ति (५७-२३५) दृष्टिर्दर्शनं वदनं वादः दृष्टीनां वादः दृष्टिवादः तत्र वा दृष्टीनां पातो दृष्टिपातः, समेद-भिण्णातो सव्वणतदिट्ठीतो तत्थ वयंति पतंति वत्ति अतो दिट्ठिवातो, सो य पंचभेदो परिकम्मादि, तत्थ परिकंमत्ति जोगकरणं, जधा गणि-तस्स सोलस परिकम्मा तग्गहितसुत्तथो सेसगणितस्स जोगो भवते, एवं गहिदपरिकम्मसुत्तथो सेससुत्ताइदिट्ठिवादसुत्तस्स जोगो भवति, तं च परिकम्मं सिद्धसेणितपरिकम्मादिधूलभेदयो सत्तविधं उत्तरभेदयो तेसीतिविधं मातुअपवादी, तं च सव्वं मूलुत्तरभेदं सुत्तत्थओ वोच्छिण्णं जधागतसंपदातं वा वचं, किं च-एतेसिं सत्तण्हं परिकम्माणं जे आदिमा परिकंमा ससमयिका, स्वसिद्धान्त-प्रज्ञापना एवेत्यर्थः, आजीविया पासंडत्था गोसालयवत्तिता, तेसिं सिद्धन्तमतेण चुताचुतसेणिता सत्त परिकम्मा पणविज्जंति । इयानि परि-कम्मे णयचिंता-णेगमो दुविहो-संगहितो असंगहिओ य, संगहितो संगहं पविट्ठो, असंगहितो ववहारं, तम्हा संगहो ववहारो रिजुसुतो सदा-इया य एक्को, एवं चउरो णया, एतेहिं छ ससमइकाइ परिकम्माइ चित्तिज्जंति, अतो भणितं ‘चउक्कणइयाणं’ ति, ते चेव जीवकाए अनुत्तरो० पातिका- दीनि ॥ ५५ ॥

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [५७] / गाथा ८२-८४
प्रत सूत्रांक [५७] गाथा ८२- ८४ दीप अनुक्रम [१५०- १५४]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ५७ ॥ अरहता भासिया गणहरेदिवि पुव्वगतं चेव पुव्वं रइयं पच्छा आयाराइ, एवमुत्तो चोदक आह-णणु पुव्वावरविरुद्धं, कम्हा ? , आयारणि-ज्जुत्तीए भणितं-‘सव्वेसिं आचारो’ गाहा, आचार्याह-सत्यमुक्तं, किंतु ठावणा, इमं पुण अक्खररयणं पडुच्च भणितं, पुव्वं पुव्वा कता इत्यर्थः, ते य उप्पायपुव्वादय चोदस पुव्वा पणत्ता, पढमं उप्पायपुव्वंति-तत्थ सव्वदव्वाणं पज्जवाण य उप्पायभावमंगीकाउं पणवणा कया, तस्स पदपरिमाणं एका पदकोडी, बित्थियं अग्गेणीयं, तत्थवि सव्वदव्वाण पज्जवाण य सव्वजीवविसेसाण त अग्गं-परिमाणं णउतिपदसह-स्सा, तइयं वीरियपवायं, तत्थवि अजीवाण जीवाण य सकामेतराण वीरियं प्रवदंतीति वीरियपव्वादं .तस्सवि चत्तारि पदसहस्सा, चउ-त्थं णत्थिअत्थिप्पवायं, जं लोगे जधा अत्थि णत्थि वा अहवा सितवायाभिप्पाददो तदेवास्ति नास्तीत्येवं प्रवाद इति अत्थिणत्थिप्पवादं भणितं, तंपि पदपरिमाणतो सद्धि पदसहस्साणि, पंचमं णाणप्पवादंति, तम्मि मइणाणाइपंचकस्य सप्रभेदं प्ररूपणा जम्हा कता तम्हा णाणप्पवादं, तंमि पदपरिमाणं एगा पदकोडी एगपदूणा, छट्ठं सच्चप्पवादं, सच्चं-संजमो तं सच्चं वयणं वा, तं सच्चं जत्थ सभेदं सपडिवक्खं च वणिज्जइ तं सच्चप्पवायं, तस्स पदपरिमाणं एगा पदकोडी छप्पदधिया, सत्तमं आयप्पवातं, आयत्ति-आत्मा सोऽणेगधा जत्थ णतदरिसणेहिं वणिज्जइ तं आयप्पवादं, तस्सवि पदपरिमाणं छव्वीसं पदकोडीओ, अट्ठमं कम्मप्पवादं, णाणावरणाइयं अट्ठविहं कम्मं पगतिठित्तिअणु-भागप्पदेसादिणहिं भेदेहिं अण्णेहिं उत्तरुत्तरभेदेहिं जत्थ वणिज्जइ तं कम्मप्पवादं, तस्सवि पदपरिमाणं एगा पदकोडी असीतिं च पदसह-स्साणि भवंति, णवमं पक्खखाणं, तंमि सव्वपक्खखाणसरूवं वणिज्जइत्ति अतो पच्चक्खखाणप्पवादं, तस्स पदपरिमाणं चउरासीति पदसह-स्साणि भवंति, दसमं विज्जणुप्पवातं, तत्थ य अण्णे विज्जाइसया वणिगता, तस्स पदपरिमाणं एगा पदकोडी दस य पदसहस्साणि, एगा-दसमं अवंशंति, वंशं णाम णिक्कलं ण वंशमवंशं सफलेत्यर्थः, सव्वे णाणतवसंजमजोगा सफला वणिज्जति अप्पसत्था य पमादादिया पूर्वगतश्रुतं ॥ ५७ ॥

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [५७] / गाथा ८२-८४
प्रत सूत्रांक [५७] गाथा ८२- ८४ दीप अनुक्रम [१५०- १५४]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ५९ ॥ वि असंखा पुरिसजुगा होंति नायव्वा ॥ ३ ॥ जाव य लक्खा चोइस सिद्धा पण्णास होंति सव्वट्ठे । पण्णासट्ठानेवि य पुरिसजुगा होंतिऽ- संखेज्जा ॥ ४ ॥ एगुत्तरा दुलक्खा सव्वट्ठाने य जाव पण्णासा । एक्केकुत्तराणे पुरिसजुगा होंतिऽसंखेज्जा ॥ ५ ॥ विपरीथं सव्वट्ठे चोइसलक्खा य निव्वुओ एगो । सव्वेव य परिवाडी पण्णासा जाव सिद्धीए ॥ ६ ॥ तेण परं लक्खादि दो दो ठाणा य सग्ग वरुचंति । सिक्खतिसव्वट्ठेहि इणमो तासि विधी होइ ॥ ७ ॥ दो लक्खा सिद्धीए दो लक्खा णरवदीण सव्वट्ठे । एवं सिलक्खचउ पंच जाव लक्खा असंखेज्जा ॥ ८ ॥ सिक्खतिसव्वट्ठेहि चित्तंरगंडिता ततो चउरो । एगा एगुत्तरिया एगादि बित्तिउत्तरा तइया ॥ ९ ॥ ततिएगादि तिओ- त्तर तिगमादि ओत्तरा चउत्थे य । पढमाए सिद्धेको दोणिय सव्वट्ठसिद्धंमि ॥ १० ॥ ततो तिणिण णरिवा सिद्धा चत्तारि होंति सव्वट्ठे । इय जाव असंखेज्जा सिक्खतिसव्वट्ठ सिद्धेहि ॥ ११ ॥ ताए बिउत्तराए सिद्धेको - तिणिण होंति सव्वट्ठे । एवं पंच य सत्त य जाव असंखेज्ज दो तिभि ॥ १२ ॥ एग चउ सत्त दसगं जाव असंखेज्ज होंति दो तिणिण । सिक्खतिसव्वट्ठेहि तिउत्तरा एत्थ णेयव्वा ॥ १३ ॥ ताहे तियगादिबिउत्तराए अउणत्तीसं तु तियग ठावेउं । पढमे उ णत्थि खेवो सैसु इमे भवे खेवा ॥ १४ ॥ ‘दुग पण नवगं तेरस सचर- स दुवीस व्वच अट्ठेव । बारस चोइस अथ अट्ठवीस छवीस पणुवीसा ॥ १५ ॥ एक्कारस तेवीसा सीयाला सतरि सतहत्तरी तइय । इग दुग सत्तासीती एगत्तरिमेव छावट्ठी ॥ १६ ॥ अउणत्तरि चउवीसा वायालसयं तहेव छवीसा । एए रासीक्खेवा तिगअंतंसा अहाक- मसो ॥ १७ ॥ सिक्खतिसव्वट्ठेहि दो दो ठाण विसमुत्तरा णेया ॥ जावूणत्तीसठाणे उणत्तीसं पुण छवीसाए ॥ १८ ॥ विसमुत्तरा य पढमे एवमसंखविसमुत्तरा णेया । सव्वट्ठवि अंतिलं अण्णाए आदिमं ठाणं ॥ १९ ॥ अउणत्तीसं वारा ठावेउं णत्थि पढम पक्खेवो । सैस सगवीसाए सव्वत्थ दुगादिउक्खेवो ॥ २० ॥ सिक्खतिपंदमादीए बित्तिथाए तह य होति सव्वट्ठे । इय एगंतारियाइं सिक्खतिसव्वट्ठटायाइं ॥ २१ ॥ चित्रान्तर- गण्डिका ॥ ५९ ॥

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [५७] / गाथा ८२-८४ 																																																							
प्रत सूत्रांक [५७] गाथा ८२- ८४ दीप अनुक्रम [१५०- १५४]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ६० ॥ एवमसंखेज्जाओ चित्तंतरगंडियाओ जेयठवा । जाव जियसत्तु राया अजियजिणपिया समुप्पण्णो ॥ ३२ ॥ एवं गाहाहि चित्तंतरगंडिया सम्मत्ता । इमा एतासि ठवणा — एत्तिया लक्खा सिद्धा—<table><tr><td>१४</td><td>१४</td><td>१४</td><td>१४</td><td>१४</td><td>१४</td><td>१४</td><td>१४</td><td>१४</td><td>१४</td></tr></table> एत्तिया सव्वट्ठगया—<table><tr><td>१</td><td>२</td><td>३</td><td>४</td><td>५</td><td>६</td><td>७</td><td>८</td><td>९</td><td>१०</td></tr></table> सिद्धा एत्तिया लक्खा—<table><tr><td>१</td><td>२</td><td>३</td><td>४</td><td>५</td><td>६</td><td>७</td><td>८</td><td>९</td></tr></table> सव्वट्ठमि गया एत्तिया लक्खा—<table><tr><td>१४</td><td>१४</td><td>१४</td><td>१४</td><td>१४</td><td>१४</td><td>१४</td><td>१४</td><td>१४</td><td>१४</td></tr></table> अलक्खा सिद्धा सव्वट्ठेवि एत्तिया एगादि एगुत्तरं दोवि गच्छंति <table><tr><td>२</td><td>३</td><td>४</td><td>५</td><td>६</td><td>७</td><td>८</td><td>९</td></tr><tr><td>२</td><td>३</td><td>४</td><td>५</td><td>६</td><td>७</td><td>८</td><td>९</td></tr></table> एवं जाव असंखेज्जा पुसिसजुगा सिद्धा, एसा पदमा, अत्ते परं सिद्धा लक्खा सव्वट्ठे लक्खा जाव असंखेज्जा पुरिसजुगा सिद्धा, एसा बीया, अओ परं एत्ति- एवं जाव असंखेज्जा आवलिया । आवलिया दूरगमणाओ पंचासीइमे ठाणे चिट्ठंति, एसा तइया गंडिया, अतः परं चतस्रो गंडिया एकोत्तरा प्रदर्श्यते । चित्रान्तर- गण्डिका ॥ ६० ॥	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	२	३	४	५	६	७	८	९	२	३	४	५	६	७	८	९
१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४																																															
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०																																															
१	२	३	४	५	६	७	८	९																																																
१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४																																															
२	३	४	५	६	७	८	९																																																	
२	३	४	५	६	७	८	९																																																	

आगम
(४४)

“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः)

.....मूलं [५७] / गाथा ||८२-८४||

प्रत
सूत्रांक
[५७]
गाथा
||८२-
८४||

दीप
अनुक्रम
[१५०-
१५४]

श्री
नन्दीचूर्णौ
॥ ६१ ॥

एगाइ एगुत्तरा पढमा णेया एगादि सिद्ध
एवं जाव असंखेज्जा.

एगादि सिवगति विउत्तरिया सच्चडे लक्खा.

तिउत्तरा तइया चित्तंतरगंढिया.

चित्रान्तर-
गण्डिका

१	३	५	७	९	११	१३
२	४	६	८	१०	१२	१४

१	५	९	१३	१७	२१	२५	२९
३	७	११	१५	१९	२३	२७	३१

१	७	१३	१९	२५	३१
४	१०	१५	२२	२८	३४

२९	३४	४२	५१	६०	६३	५५	४०	७६	१०६	३१
३१	३८	४६	३५	४७	५७	५४	४२	९९	३०	११६

३	८	१५	२५	११	१७	२९	१४	५०
५	१२	२०	९	१५	१३	२८	२६	७३

एवं गाहाणुसारेण णायव्वं जाव असंखेज्जा । चूलत्ति सिहरं दिट्ठिवाते जं परिकम्मसुत्तपुव्वपुव्वानुओगे य भणितं तच्चूलासु भणितं,
ता य चूलाओ आदिल्लपुव्वान चउण्हं, चूलवत्थू भणितातो चेव सव्वुवरि ठविता पढिज्जंति य, अतो ते सुतपव्वयचूला इव चूला,
सेसि जहक्कमेणं संखा, चतु बारस अट्ठ दस य भवन्ति चूडा चउण्ह पुव्वानं । एए य चूलवत्थू सव्वुवरि किल पढिज्जंति ॥ १ ॥ संखेज्जा वत्थू,
सव्वुवीसुत्तरा दो सता, संखेज्जा चूलवत्थुत्ति चउतीसं, (८५-२४६) अणंता भावत्ति भवनं भूतिर्वा भावः, ते य जीवाजीवात्मका अणंता प्रति-

॥ ६१ ॥

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [५७] / गाथा ८२-८४
प्रत सूत्रांक [५७] गाथा ८२-८४ दीप अनुक्रम [१५०-१५४]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णी ॥ ६२ ॥ बद्धा, अणंता अभावति अभवनं अभावः अभूतिर्वा, जम्हा जीवा अजीवत्तेण अभावः अजीवो य जीवत्तेण, घडो पडत्तेण पडो य घडत्तेण, एमादि अणंता अभावा प्रतिबद्धा, अहवा जे जहा जावइया भावा तेसिं पडिपक्खतो तावइया चेव अणंता अभावा भवन्ति, ‘अणंता हेउ’ ति पंचदसावयववयणे सपक्खधम्मसपक्खत्तअभिलसितसज्जसाधकं वयणं हेतू भवति, अहवा सव्वजुत्तिजुत्तं वदणं हेतू भण्णति, अहवा सव्वे जिणवयणपहा हेतू प्रतिपादकत्तणतो, णिहोसहेतुवयणं वा, सुत्तस्स य अणंतगमत्तणतो, एवं अणंता अहेतू, भाणितपडिपक्खो, ते य अणंता चेवाहेतू, अणंता कारणत्ति कज्जसाहयं कारणंति, ते य पयोगवीससातो अणंता भाणियक्खा, जं च जस्स असाधकं तं तस्स अकारणं, जहा चक्कदंडादयो पडस्स, एवं अणंता अकारणा, अणंता जीवा इत्यादि कंठ्यं, ‘इच्चयं दुवालसंगं गणिपिडगं तीते काले अणंता जीवा आणाय विराधेत्ता इत्यादि, (५८-२४७) दुवालसंगं गणिपिडगं तिविहं पणत्तं-सुत्ततो अत्थतो तदुभयओ, एखेव आणा तिविहा सुत्ताणा अत्थाणा तदुभयाणा य, एगट्ठिता तहवि अभिहाणतो विसेसो कज्जइ, यथा आज्ञाप्यते एभिः तदा आज्ञा भवति, तंतुभिः पटं व्यय, देवदत्तवत् आज्ञाप्यते यया हितोपदेशः तदा आज्ञा इति । इदंणि एतेसिं विराहणा चित्तिज्जइ, जं सुत्ततो दुवालसंगं गणिपिडगं तं अत्थतो भणितं अभिणिवेसेण अण्णहा पण्णवैतो ताए अत्थाणाए सुत्तं विराहिता तीते कालेऽणंता जीवा संसारं भमियपुब्बा गोढामाहिलवत्, अहवा जं अत्थतो जं दुवालसंगं गणिपिडगं सुत्ततो अभिनिवेसेण अण्णहा पडित्ता ताए सुत्ताणाए अत्थं विराहेत्ताऽतीते कालेऽणंता जीवा संसारं भमियपुब्बा जहा जमाली, अहवा आणंति पंचविहायाराधणसीलता गुरुणो हितोवदेसवदणं आणाए अण्णहा आयरंतेण गणिपिडगं विराधितं भवति, एवं तीए काले अणंता जीवा संसारं भमियपुब्बा, एसो अक्खरसमो अत्थो, इमो यऽणक्खरसमो-आणाए विराधेत्ता इति, जहा छायाए भुंजित्ता गतो, णो छायाए करणभूयाए भुंजेत्ता, किं तु छायायां भुत्त्वा गतोत्ति, एवं आज्ञायां विराधनं कृत्वा, सा य आणा इमा- भावाद्याः ॥ ६२ ॥
	अथ द्वादशांगीनां आराधना-विराधनायाः फलम् वर्णयते

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [५८] / गाथा [८५]
प्रत सूत्रांक [५८] गाथा [८५] दीप अनुक्रम [१५५- १५७]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिताः आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ६३ ॥ इच्छेद्यं दुबालसंगं गणपिडगं आणाए विरोहत्ता' सेसं पूर्ववत्, पडुप्पण्णअणामतेसु एवं चेव वत्तव्वं, णवरं पडुप्पण्णे काले परिता जीवा इति, अणता असंखेज्जा य ण भवतित्ति, मणुयाणं संखेज्जत्तणतो, आराहणसुत्तेसु एवं चेव वत्तव्वं, ण कयाती णासी अतीतकाले नास्तित्व- भावप्रतिषेधकं सूत्रं, 'भुवि च' इत्यादि त्रिकाले अस्तित्वसाधकं सूत्रं, त्रिकालभावणता चेव अचलता, टिच्चा धुवा मेवादिवत्, धुवत्तणतो चेव जीवादिणवपदत्थेसु नियुक्तं नियतं जधा लोकवचनं पंचास्तिकायेष्विव, णियत्तणतो चेव सासयं शब्द भवतीति समयावलिकामुहूर्त्तेदिनादि- प्वाकालं, सासयत्तणतो चेव वायणादिषु अक्खयं, नास्ति ज्ञयो अक्षयं गंगासिंधुपवाहिष्वपि पोंडरीयादिहृदवत्, अक्खयत्तणतो चेव अव्ययं नास्य व्ययो अव्ययं, मानुषोत्तरा बहियसमुद्भवत्, अव्ययत्तणतो चेव स्वप्नाणे अवट्टितं जंबूद्वीपादिवत्, अक्खयत्तणतो चेव सत्त्वहा चित्तिज्ज- माणं णिच्चं आकाशवत्, अविनाशीत्यर्थः, अहवा एते धुवादिया एगट्टिया, चोदक आह-इच्छेवं दुबालसंगं धुवादिपदपरुवितं किमाणा- गेज्झं?, आचार्याह-जम्हा जिणाणण्णहावादिणो तम्हा तेसिं वयणं सव्वं आणाते चेव गेज्झं, कर्हिंवि दिट्ठंतावि गेज्झं, इह दुबालसंगस्स धुवादि- परुवितत्थस्स साधको इमो दिट्ठतो से जधा णामएइत्यादि, कथं, तच्च दुबालसंगं सुत्तं चडव्विहं दव्वादियाण जाव सुयणाणकेवळंते पडुच्च भणितं-दव्वतो णं सुयणाणी सुयणाणेणोवडत्ते सुत्तविण्णत्तीए सव्वदव्वादि जाणति, पासइत्ति विरोधो?, उच्यते, जम्हा अदिट्ठाणवि मेरुमा- दियाण पासणयाए आगारया लिहइ णो वाऽविट्ठं लेक्खइ, पण्णवणाए य भणितं सुयणाणपासणतत्ति ण विरोहो, आरतो पुण जे सुतणाणी ते सव्वदव्वाण पासणतासु भइया, सा य भयणा मतिविसेसतो जाणियन्वा, एवं खेत्तकालभावेसुवि भाणितव्वा, सुतणाणदंसणत्थं भण्णति 'अक्खर' गाहा (५८६-२४९) (५१-२४९) इमा चोहसविहसुतभावपरुवणा कता, एत्थं आयारादि गणधरपणीयं तस्स पत्तेयबुद्धसासि- तस्स वा तधाकालाणुभावतो बलबुद्धिमेवाविहाणिं जाणीऊण जे य सुयभावा आयरिण्हिं णिज्जूढा तेसु गहणविही दंसिज्जइ--'आगम०' गाहा द्वादशांगा- राधना विराधना फलं ॥ ६३ ॥

आगम (४४)	“नन्दी”- चूलिकासूत्र-१ (चूर्णिः) मूलं [५९] / गाथा ८६-९०
प्रत सूत्रांक [५९] गाथा ८६- ९० दीप अनुक्रम [१५८- १६३]	श्री नन्दीचूर्णिः ॥ ६४ ॥ (#८७-२४९) इमेते अष्ट बुद्धिगुणा 'सुस्वस्वहं' गाथा (#८८-२४९) विनेयस्स अत्यसवणे इमा विही 'मूयं हुंकारं०' गाथा (#८९-२४९) गुरुणो अणुयोगकहणे इमा विही 'सुसत्थो खलु०' गाथा (#९०-२४९) 'जं नु भणियमूणं वा अतिरितं वावि अहव विवरीयं । तं सम्मणुयेम- धरा कहेव काउं समवस्संति ॥ १ ॥ गिरेणगामेत्तमहासहा जिता, पसूयती संख जगट्ठिताकुला । कमट्ठिता वीमत चित्तितक्खरा फुटं कहेयं- तभिधानकंसुणा ॥ १ ॥ सकराजतो पंचसु वर्षशतेषु नंद्यभ्ययनचूर्णिं समाप्ता इति ॥ ग्रन्थामं ॥ १५०० ॥ इति श्रीनन्द्यभ्ययनचूर्णिः समाप्ता । द्वादशांगा- राघना विराघना- फलं ॥ ६४ ॥
	मुनिश्री दीपरत्नसागरेण पुनः संपादिता (आगमसूत्र ४४) “नन्दीसूत्र-चूर्णिः” परिसमाप्ताः

नमो नमो निम्मलदंसणस्स
पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरुभ्यो नमः

44

पूज्य आगमोद्धारक आचार्य श्री सागरानंदसूरीश्वरेण संशोधितः संपादितश्च
“नन्दी चूलिकासूत्र” [चूर्णिः]

(किंचित् वैशिष्ट्यं समर्पितेन सह)
मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः
“नन्दीसूत्र” चूर्णिः नामेण परिसमाप्ताः

Remember it's a Net Publications of 'jain_e_library's'